हिन्दू चेतना

(पाक्षिक)

E-mail:hinduchetna.patrika@gmail.com

युगाब्द 5119 | हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिन्दूः पतितो भवेत्। मम दीक्षा हिन्दुरक्षा मम मंत्रः समानता।। | 2074 वि.सं.

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
श्रीमद्भगवद्गीता	3
दिन दर्शिका	4
रक्षाबंधन	5
श्रीकृष्णजन्माष्टमी	7
राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा की कहानी	9
कौन युवा राष्ट्रीय प्रश्नों के उत्तर बनेंगे?	11
अखण्ड भारत मोर्चा ने किया पुतला दहन	12
क्या कश्मीर में बकरा पार्टी की लडाई अपने अंतिम दौर में पहुँच गई है?	13
स्वतंत्रता दिवस से राष्ट्र स्वच्छ राजनीति अभियान चलाएँ	16
'रोजा इफ्तार और साम्प्रदायिक सौहार्द'	18
जीतने को आतंकवाद से जंग, अब तो बदलो रंग-ढ़ंग	19
तुष्टीकरण की आग में जल रहे हैं पश्चिम बंगाल के हिंदू	21
अमरनाथ यात्रियों पर हुए आतंकवादियों हमले के विरोध में जन्तर-मन्तर पर शहीद भक्तों को श्रद्धांजलि एवं विशाल प्रदर्शन	23
प्रथम पाँच दिनों में 62,608 श्रद्धालुओं ने किए भगवान बोले नाथ के दर्शन	25
विश्व हिन्दू परिषद द्वारा जम्मू बंद का आह्वान	26

अथैकादशोऽध्याय:

द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः।
दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन्॥२०॥

हे महात्मन्! यह स्वर्ग और पृथ्वी के बीच का सम्पूर्ण अन्तराल और सभी दिशाएँ एक आप से ही परिपूर्ण हैं। आपके इस अद्भूत और उग्र रूप को देखकर तीनों लोक अत्यन्त व्याकुल हो रहे हैं।

जो विराट् यह रूप आपका-संभव नहीं कदापि किसी का
स्वर्ग मृत्यु पाताल लोक के-जो आकाश मध्य इन सबके
पूरब पश्चिम दक्षिण उत्तर-चारों कोने नीचे ऊपर
सभी पूर्णतः व्याप्त आप से-कोई नहीं महान आप से
अद्भुत परम प्रचण्ड भयंकर-उग्र विलक्षण रूप देखकर
प्राणी तीनों लोक अवस्थित-सभी व्यथित भयभीत अचंभित

दोहा

अर्जुन को तो वस्तुतः, ऐसा हुआ प्रतीत ।
विश्वरूप को देखकर, तीन लोक भयभीत ।।
मिला त्रिलोकी को न था, दिव्य चक्षु वरदान ।
तो किमि देखा त्रिलोकी, रूप विराट् महान ।।

अर्जुन को जो हुआ दृष्टिगत-था सब विश्वरूप अंतर्गत
हिंसक पशु अरु शत्रु आदि से-थे भयभीत व व्यथित व्याधि से
निज प्राबध कर्म फल संकुल-तीन लोक थ इनसे व्याकुल
अर्जुन की प्रतीति का कारण-अरु शंका का यही निवारण

अमी हिं त्वां सुरसङ्घा विशन्ति केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति।
स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसङ्घाः स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः॥२१॥

वे ही देवताओं के समूह आप में प्रविष्ट हो रहे हैं। उनमें से कई तो भयभीत होकर हाथ जोड़कर आपके नामों और गुणों का गान कर रहे हैं। महर्षियों और सिद्धों के समूह 'मंगल हो' 'कल्याण हो' ऐसा कहकर उत्तम-उत्तम स्तोत्रों द्वारा आपकी स्तुति कर रहे हैं।

अर्जुन ने बतलाया प्रभु को-स्वर्ग लोक मे दिखा जिनको
वे ही सुर समुदाय रूप में-प्रवेश करते विश्व रूप में
अन्य देवता तुम्हें देखकर-परम भयातुर हाथ जोड़कर नाम
रूप लीला आदिक का-करते हैं गुणगान आपका

सुगम गीता व्याख्या पुस्तक से
लेखक - **श्री प्यारेलाल त्रिवेदी**

श्रावण शुक्ल पक्ष विक्रम संवत् २०७४
१ अगस्त से १५ अगस्त २०१७ ई. तक

सूर्य दक्षिणायन — वर्षा ऋतु

दिन	तिथि	नक्षत्र	प्रविष्टि सौर मास	दिनांक आंग्लमास	विशेष विवरण
मंगलवार	नवमी	विशाखा	१७	1	
बुधवार	दशमी	अनुराधा	१८	2	
गुरुवार	एकादशी	ज्येष्ठा	१९	3	पवित्रा एकादशी
शुक्रवार	द्वादशी	मूल	२०	4	
शनिवार	त्रयोदशी	पूर्वाषाढ़	२१	5	शनि प्रदोष व्रत
रविवार	चतुर्दशी	उत्तराषाढ़	२२	6	
सोमवार	पूर्णिमा	श्रवण	२३	7	रक्षाबंधन, संस्कृत दिवस, श्रावणी उपाकर्म
मंगलवार	प्रतिपदा	धनिष्ठा	२४	8	पंचक प्रारम्भ 16-16 से, स्वामी शिवानन्द जयंती
बुधवार	द्वितीया	शतभिषा	२५	9	
गुरुवार	तृतीया	पूर्वाभाद्रपद	२६	10	कज्जली तीज
शुक्रवार	चतुर्थी	उत्तराभाद्रपद	२७	11	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, बहुला
शनिवार	पञ्चमी	रेवती	२८	12	पंचक समाप्त 29-50
रविवार	षष्ठी	अश्विनी	२९	13	चन्दन षष्ठी व्रत
सोमवार	सप्तमी	भरणी	३०	14	श्रीकृष्णजन्माष्टमी स्मार्त
मंगलवार	अष्टमी	कृतिका	३१	15	श्रीकृष्णजन्माष्टमी (वैष्णव), स्वतंत्रता दिवस

श्री अष्टावक्र गीता (अष्टावक्र उवाच)

व्यापारे खिद्यते यस्तु निमेषोन्मेषयोरपि ।
तस्यालस्याधुरीणस्य सुखं नान्यस्य कस्यचित् ॥४॥ १६

"जो आँख के खोलने और बंद करने के व्यापार से भी दु:खी होता है, वह आलसी-शिरोमणि का ही सुख है, किसी अन्य का नहीं।"

इदं कृतमिदं नेति, द्वन्द्वैर्मुक्तं यदा मनः ।
धर्मार्थकाममोक्षेषु निरपेक्षं तदा भवेत् ॥५॥ १६

"यह किया गया है, यह नहीं किया गया, इन द्वन्द्वों से जब मन मुक्त हो जाता है, तभी वह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में निरपेक्ष होता है।"

रक्षाबंधन

भारत त्योहारों का देश है। यहाँ विभिन्न प्रकार के त्योहार मनाए जाते हैं। हर त्योहार अपना विशेष महत्त्व रखता है । रक्षाबंधन भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक त्योहार है। यह भारत की गुरु-शिष्य परंपरा का प्रतीक त्योहार भी है। यह दान के महत्त्व को प्रतिष्ठित करने वाला पावन त्योहार है।

रक्षाबंधन का त्योहार श्रावण पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। श्रावण मास में ऋषिगण आश्रम में रहकर अध्ययन और यज्ञ करते थे। श्रावण-पूर्णिमा को मासिक यज्ञ की पूर्णाहुति होती थी। यज्ञ की समाप्ति पर यजमानों और शिष्यों को रक्षा-सूत्र बाँधने की प्रथा थी। इसलिए इसका नाम रक्षा-बंधन प्रचलित हुआ। इसी परंपरा का निर्वाह करते हुए ब्राह्मण आज भी अपने यजमानों को रक्षा-सूत्र बाँधते हैं । बाद में इसी रक्षा-सूत्र को राखी कहा जाने लगा। कलाई पर रक्षा-सूत्र बाँधते हुए ब्राह्मण निम्न मंत्र का उच्चारण करते हैं-

येन बद्धो बली राजा, दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रति बच्चामि, रक्षे! मा चल, मा चल॥

अर्थात् रक्षा के जिस साधन (राखी) से अतिबली राक्षसराज बली को बाँधा गया था, उसी से मैं तुम्हें बाँधता हूँ। हे रक्षासूत्र! तू भी अपने कर्तव्यपथ से न डिगना अर्थात् इसकी सब प्रकार से रक्षा करना।

आजकल राखी प्रमुख रूप से भाई-बहन का पर्व माना जाता है। बहिनों को महीने पूर्व से ही इस पर्व की प्रतीक्षा रहती है। इस अवसर पर विवाहित बहिनें ससुराल से मायके जाती हैं और भाइयों की कलाई पर राखी बाँधने का आयोजन करती हैं। वे भाई के माथे पर तिलक लगाती हैं तथा राखी बाँधकर उनका मुँह मीठा कराती हैं। भाई प्रसन्न होकर बहन को कुछ उपहार देता है। प्रेमवश नया वस्त्र और धन देता है। परिवार में खुशी का दृश्य होता है। बड़े बच्चों के हाथों में रक्षा-सूत्र बाँधते हैं। घर में विशेष पकवान बनाए जाते हैं।

रक्षाबंधन के अवसर पर बाजार में विशेष चहल-पहल होती है। रंग-बिरंगी राखियों से दुकानों की रौनक बढ़ जाती है। लोग तरह-तरह की राखी खरीदते हैं। हलवाई की दुकान पर बहुत भीड़ होती है। लोग उपहार देने तथा घर में प्रयोग के लिए मिठाइयों के पैकेट खरीदकर ले जाते हैं ।

श्रावण पूर्णिमा के दिन मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। लोग गंगाजल लेकर मीलों चलते हुए शिवजी को जल चढ़ाने आते हैं। काँधे पर काँवर लेकर चलने का दृश्य बड़ा ही अनुपम होता है। इस यात्रा में बहुत आनंद आता है। कई तीर्थस्थलों पर श्रावणी मेला लगता है। घर में पूजा-पाठ और हवन के कार्यक्रम होते हैं। रक्षाबंधन के दिन दान का विशेष महत्त्व माना गया है। इससे प्रभूत पुण्य की प्राप्ति होती है, ऐसा कहा जाता है। लोग कंगलों को खाना खिलाते हैं तथा उन्हें नए वस्त्र देते हैं। पंडित पुराहितों को भोजन कराया जाता है तथा दान-दक्षिणा दी जाती है।

रक्षाबंधन पारिवारिक समागम और मेल-मिलाप बढ़ाने वाला त्योहार है। इस अवसर पर परिवार के सभी सदस्य इकट्ठे होते हैं। विवाहित बहनें मायके वालों से मिल-जुल आती हैं। उनके मन में बचपन की यादें सजीव हो जाती हैं। बालक-बालिकाएँ नए वस्त्र पहने घर-आँगन में खेल-कूद करते हैं। बहन भाई की कलाई में राखी बाँधकर उससे अपनी रक्षा का वचन लेती है। भाई इस वचन का पालन करता है। इस तरह पारिवारिक संबंधों में प्रगाढ़ता आती है। लोग पिछली कड़ुवाहटों को भूलकर आपसी प्रेम को महत्त्व देने लगते हैं।

इस तरह रक्षाबंधन का त्योहार समाज में प्रेम और भाईचारा बढ़ाने का कार्य करता है। संसार भर में यह अनूठा पर्व है। इसमें हमें देश की प्राचीन संस्कृति की झलक देखने को मिलती है।

शाश्वत स्नेह और सुरक्षा की दृष्टि से आश्वस्त करने

वाला यह त्योहार भाई-बहन के प्रेम का साक्षी एक पवित्र सास्कृतिक त्योहार है। यों यह मुख्य रूप से हिन्दू जाति और धर्मावलम्बियों के घर में ही मनाया जाता है, पर अन्य जातियों के व्यक्तियों को भी राखी बान्धते बन्धवाते पूर्व इतिहास में तो देखा ही गया है, आजकल भी अक्सर दिखाई दे जाया करता है। कई बार हिन्दू बहनें किसी मुस्लिम या अन्य जाति-वर्ग के भाई को राखी बान्धती हुई दिखाई दे जाती हैं।

इसी प्रकार हिन्दू भाई अन्य जाति की बहनों से आग्रहपूर्वक पवित्र राखी के धागे कलाई पर बन्धवा कर उनके प्रेम और सुरक्षा का दायित्व अपने-आप पर लेते हुए सुने-देखे जाते हैं। इस प्रकार प्रमुख रूप से वह बहन-भाई के पवित्र प्रेम और अटूट रिश्ते-नाते को रूपायित करने वाला त्योहार ही है। रक्षाबन्धन या राखी का यह पर्व कब, क्यों और किस प्रकार आरम्भ हुआ, पुराण-इतिहास में इस का कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता। हाँ, विशेष अवसरो पर वहाँ पुरोहितो द्वारा अपने यजमानों की दाहिनी कलाई में रक्षा या मंगल कामना करते हुए एक मौलिसूत्र बाँधने का वर्णन या विधान अवश्य मिलता है।

बाद में यह विधान भी मिलने लगता है कि हिन्दू राजा और सामन्त आदि जब युद्ध करने जाया करते थे, तब उनकी माताएँ, बहनें और पत्नियाँ उनके माथे पर अक्षत कुमकुम का केसर लगा कर एक मौलि सूत्र उन की विजय एवं मंगल-कामना करते हुए अवश्य बाँध दिया करती थीं। अनुमान होता है कि इसी रीति ने धीरे-धीरे विकास कर के रक्षाबन्धन का स्वरूप धारण कर लिया होगा। बाद में शान्ति काल में इस का विधान केवल भाई-बहनों तक ही रूढ़ एवं सीमित हो कर रह गया होगा।

इसे मात्र परम्परा को निबाहे जाना ही कहा जा सकता है। कभी राखी के कच्चे धागों के बन्धन के प्रभाव एवं शक्ति को अचूक माना जाता था, इस तथ्य में तनिक भी सन्देह नहीं। इतिहास इस बात का जीवन्त गवाह है कि जब कभी भी किसी जातीय या विजातीय भाई को किसी बहन ने राखी भिजवाई, उसे पवित्र प्रेम का अमर-निश्छल निमंत्रण मान कर उस भाई ने अपने दु:ख-सुख, संकट-विपदा आदि की परवाह किए बिना प्राण-पण की बाजी लगा कर मुँह बोली बहन के वचन की रक्षा के लिए अपने सर्वस्व की बाजी लगा दी। चित्तौड़ के महाराणा संग्राम सिंह की मृत्यु के बाद जब सुल्तान बहादुरशाह ने चारों ओर से चित्तौड़ गढ़ को घेर लिया था, तब अपने-आप को नितान्त असहाय पाकर महारानी कर्मवती ने शहंशाह हुमायूँ को राखी भिजवा कर अपने राज्य की रक्षा के लिए मौन निमंत्रण दिया।

राखी की पवित्रता और महत्त्व को समझने वाले हुमायूँ स्वयं शेरशाह सूरी के आक्रमणों से आतंकित रहने पर भी मुँह बोली बहन कर्मवती के चित्तौड़ की रक्षा के लिए भागे आए थे। यह ठीक है कि समय पर न पहुँच पाने के कारण वे चित्तौड़ को पराजित होने और कर्मवती को जौहर की ज्वाला में जल मरने से बचा नहीं पाए, पर बाद में बहादुर शाह को पराजित कर और मेवाड के असली वारिस (उदयसिंह) को उसके राज्य पर अधिष्ठित करवा कर उन्होंने राखी का मोल भरसक चुका दिया। इस प्रकार इस ऐतिहासिक घटना ने रक्षाबन्धन जैसे पवित्र पर्व का महत्त्व निश्चय ही और बढ़ा दिया।

आज भी रक्षाबन्धन का पर्व आने पर बाजार रंग-बिरंगी राखियों से भर जाते हैं। राखी खरीदने वाली बहनों की बाजारों में भीड़-भाड़ भी काफी रहा करती है। मिठाइयों की दुकानें और स्टील भी भरे-पूरे एवं सजे-धजे रहा करते हैं। वहाँ भी खूब खरीददारी होती है। रक्षाबन्धन वाले दिन सजी-धजी बहनों की भीड घरों, बाजारों, बसों, स्कूटरों, कारों आदि में अपनी-अपनी हैसियत के साथ सर्वत्र देखी-परखी जाती है।

त्योहारों के अवसरों पर व्यक्त परम्पराओं और रीति-नीतियों के उचित निर्वाह से ही किसी संस्कृति के उदात एवं सात्विक गुण भी उजागर हो पाया करते हैं। अत: यदि हम लोग रक्षाबन्धन की पावन अंतरंगत एवं सांस्कृतिक उच्चता को ध्वस्त नहीं होने देना चाहते, तो हमें उसमें आ गई औपचारिकता का निराकरण करना ही होगा।

स्रोत: इंटरनेट

श्रीकृष्णजन्माष्टमी

यशोदा नंदन, देवकी पुत्र भारतीय समाज में कृष्ण के नाम से सदियों से पूजे जा रहे हैं। तार्किकता के धरातल पर कृष्ण एक ऐसा एकांकी नायक हैं, जिसमें जीवन के सभी पक्ष विद्यमान है। कृष्ण वो किताब हैं जिससे हमें ऐसी कई शिक्षाएं मिलती हैं जो विपरीत परिस्थिति में भी सकारात्मक सोच को कायम रखने की सीख देती हैं।

कृष्ण के जन्म से पहले ही उनकी मृत्यु का षड्यंत्र रचा जाना और कारावास जैसे नकारात्मक परिवेश में जन्म होना किसी त्रासदी से कम नही था। परन्तु विपरीत वातावरण के बावजूद नंदलाला, वासुदेव के पुत्र ने जीवन की सभी विधाओं को बहुत ही उत्साह से जीवंत किया है। श्री कृष्ण की संपूर्ण जीवन कथा कई रूपों में दिखाई पड़ती है।

नटवरनागर श्री कृष्ण उस संपूर्णता के परिचायक हैं जिसमें मनुष्य, देवता, योगीराज तथा संत आदि सभी के गुण समाहित है। समस्त शक्तियों के अधिपति युवा कृष्ण महाभारत में कर्म पर ही विश्वास करते हैं। कृष्ण का मानवीय रूप महाभारत काल में स्पष्ट दिखाई देता है। गोकुल का ग्वाला, बृज का कान्हा धर्म की रक्षा के लिए रिश्तों के मायाजाल से दूर मोह-माया के बंधनों से अलग है।

कंस हो या कौरव पांडव, दोनों ही निकट के रिश्ते फिर भी कृष्ण ने इस बात का उदाहरण प्रस्तुत किया कि धर्म की रक्षा के लिए रिश्तों की बजाय कर्तव्य को महत्त्व देना आवश्यक है। ये कहना अतिश्योक्ति न होगी कि कर्म प्रधान गीता के उपदेशों को यदि हम व्यवहार में अपना लें तो हम सब की चेतना भी कृष्ण सम विकसित हो सकती है।

कृष्ण का जीवन दो छोरों में बंधा है। एक ओर बांसुरी है, जिसमें सृजन का संगीत है, आनंद है, अमृत है और रास है। तो दूसरी ओर शंख है, जिसमें युद्ध की वेदना है, गरल है तथा निरसता है। ये विरोधाभास ये समझाते हैं कि सुख है तो दु:ख भी है।

यशोदा नंदन की कथा किसी द्वापर की कथा नही है, किसी ईश्वर का आख्यान नही है और ना ही किसी अवतार की लीला। वो तो यमुना के मैदान में बसने वाली भावात्मक रुह की पहचान है। यशोदा का नटखट लाल है तो कहीं द्रोपदी का रक्षक, गोपियों का मनमोहन तो कहीं सुदामा का मित्र। हर रिश्ते में रंगे कृष्ण का जीवन नवरस में समाया हुआ है।

माखन चोर, नंदकिशोर के जन्म दिवस पर मटकी फोड़ प्रतियोगिता का आयोजन, खेल-खेल में समझा जाता है कि किस तरह स्वयं को संतुलित रखते हुए लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है; क्योंकि संतुलित और एकाग्रता का अभ्यास ही सुखमय जीवन का आधार है। सृजन के अधिपति, चक्रधारी मधुसूदन का जन्मदिवस उत्सव के रूप में मनाकर हम सभी में उत्साह का संचार होता है और जीवन के प्रति सृजन का नजरिया जीवन को खुशनुमा बना देता है।

कृष्ण जन्माष्टमी हिंदू धर्म के लोगों द्वारा हर साल मनाया जाने वाला त्योहार है। यह भगवान कृष्ण की जयंती के रूप में मनाया जाता है भगवान कृष्ण हिंदू धर्म के भगवान हैं, जिन्होंने पृथ्वी पर एक मानव के रूप में जन्म लिया था ताकि वह मानव जीवन को बचा सकें और अपने भक्तों के दुख दूर कर सके। ऐसा माना जाता है कि कृष्ण भगवान विष्णु के आठवें अवतार थे।

भगवान कृष्ण को गोविंदा, बालगोपाल, कान्हा, गोपाल लगभग 108 नामों से जाना जाता है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान कृष्ण को प्राचीन समय से हिंदू धर्म के लोगों द्वारा उनकी विभिन्न भूमिकाओं और शिक्षाओं (जैसे भगवद गीता) के लिए पूजा जाता है।

हिंदू कैलेंडर के अनुसार, भगवान कृष्ण का जन्म अष्टमी (8 वें दिन) को कृष्ण पक्ष में श्रावण महीने में

अंधेरी आधी रात में हुआ था। भगवान कृष्ण ने अपने भक्तों के लिए इस धरती पर जन्म लिया और शिक्षक, संरक्षक, दार्शनिक, भगवान, प्रेमी, विभिन्न भूमिकाएं निभाईं। हिंदू लोग भगवान विष्णु की पूजा करते हैं और विभिन्न प्रकार के कृष्ण के रुपों की पूजा करते हैं।

उनके हाथों एक बांसुरी (बन्सुरी) और सिर पर एक मोर पंख रहता है। कृष्ण अपनी रासलीलाओं और अन्य गतिविधियों के लिए अपने मानव जन्म के दौरान बहुत प्रसिद्ध हैं।

हम हर साल अगस्त या सितंबर में बड़े उत्साह, तैयारी और खुशी के साथ जन्माष्टमी मनाते हैं। पूर्ण भक्ति, आनन्द और समर्पण के साथ लोग जन्माष्टमी (जिसे सटम आथम, गोकुलाष्टमी, श्री कृष्ण जयंती आदि कहते हैं) का जश्न मनाते हैं।

यह भाद्रप्रद माह में आठवें दिन प्रतिवर्ष मनाया जाता है। लोग व्रत रखते हैं, पूजा करते हैं, भक्ति गीत गाते हैं, और भगवान कृष्ण के सम्मान में भव्य उत्सव के लिए दही हंडी, रास लीला और अन्य गतिविधियाँ करते हैं।

2017 को पूरे भारत में और साथ ही विदेशों में कृष्ण जन्माष्टमी (भगवान कृष्ण की जन्मगांठ) हिंदू लोगों द्वारा 14 अगस्त सोमवार को मनाया जाएगा।

कुछ लोग जन्म और पूजा के बाद अपना उपवास तोड़ते हैं लेकिन कुछ लोग सूर्योदय के बाद सुबह में अपना उपवास तोड़ते हैं। भगवान कृष्ण के जन्म के बाद भक्ति और पारंपरिक गीत और प्रार्थना गाते हैं। राजा कंस के अन्याय से लोगों को रोकने के लिए भगवान कृष्ण ने द्वापर युग में जन्म लिया था।

अगर हम पूरी भक्ति, समर्पण, और विश्वास से प्रार्थना करते हैं तो वो हमारी प्रार्थना सुनते हैं। वह हमारे सभी पापों और दुखों को भी मिटा देते हैं और हमेशा मानवता की रक्षा करते हैं।

मथुरा में जन्माष्टमी उत्सव

भगवान कृष्ण के जन्मस्थान, मथुरा में जन्माष्टमी का त्योहार महान भव्यता और भक्ति से मनाया जाता है। जैसा कि भगवान कृष्ण आधी रात को पैदा हुये थे, कई अनुष्ठानों को ठीक उसी समय किया जाता है। सबसे लोकप्रिय और भव्य द्वारकाधीश मंदिर में देखा जा सकता है, जहाँ कृष्ण भगवान को दूध और दही में एक अनुष्ठानिक स्नान दिया जाता है।

श्रावण के महीने में झुल्लनोत्सव मथुरा में होता है। घाटों और मंदिरों को इस तरह सुंदर और विस्तृत रूप से सजाया जाता है कि ये पूरे महीने महिमा और जश्न मनाया जाता है।

पूरे महीने मथुरा शहर प्रार्थना में डूबा रहता है शंख और घंटियों की आवाज चारों तरफ गूंजती है। भगवान श्रीकृष्ण के स्वागत के लिए भक्तों की भीड़ इस पवित्र शहर में इकट्ठा होती है धार्मिक अनुष्ठान के बाद पंचामृत, भक्तों को शहद, गंगाजल, दही, घी का मिश्रण वितरित किया जाता है जो लोग व्रत रखते हैं वे प्रसाद के साथ अपने उपवास को तोड़ते हैं। खीर, लड्डू और मक्खन जैसी अनमोल व्यंजनों को भगवान को प्रसन्न करने के लिए सुरुचिपूर्ण प्लेटों में प्रसाद लगाया जाता है।

रासलीला, जिसका भगवान स्वयं के गोपियों के साथ प्रदर्शन करते थे, उसका का एक रूप, मथुरा शहर में हर जगह आयोजित किया जाता है पेशेवर और शौकीन दोनों बहुत ही जुनून और भक्ति के साथ भाग लेते हैं। आम तौर पर यह नृत्य रूप युवा लड़कों द्वारा किया जाता है, जो 10-13 वर्ष के होते हैं।

वृंदावन में जन्माष्टमी का उत्सव

महाभारत के अनुसार, भगवान कृष्ण ने अपने प्रारंभिक वर्ष यमुना नदी के तट पर स्थित वृंदावन में बिताए। रासलीला प्रदर्शन के लिए ज्ञात वृंदावन शहर में हर साल लाखों श्रद्धालु जन्माष्टमी के त्योहार के दौरान दौरा करने आते हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार, वृंदावन में मधुबन एक ऐसा स्थान है जहाँ भगवान कृष्ण रासलीला करते थे।

त्योहार से कम से कम 7-10 दिन पहले इस पवित्र शहर वृंदावन में जश्न मनाया जाता है। पूरे शहर में कई नाट्य या नाटक और रासलीला का आयोजन किया जाता है। त्योहार के दौरान हजारों मंदिरों के बीच, बांके बिहारी मंदिर, एस्कॉन मंदिर और श्रीकृष्ण बलराम मंदिर में सबसे ज्यादा श्रद्धालुओं का आकर्षण रहता है। अनुष्ठानवादी स्नान के अलावा, पूरे दिन सभी मंदिरों में कई पूजा और धार्मिक समारोह आयोजित किए जाते हैं।

स्रोत:इंटरनेट

राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा की कहानी

-मोहनलाल दास

दुनियाँ में प्रत्येक राष्ट्र की पहचान उसका अपना ध्वज है। इतना ही नहीं वह राष्ट्र की गरिमा तथा सम्मान की पहचान होता है। ध्वज मात्र एक कपड़े का होता है, जिसका कोई महत्त्व नहीं होता है। लेकिन जब कोई राष्ट्र उसके रंग का और साथ ही उसमें दिये गये विशेष चिह्न को अपना सर्वोपरि मान लेता है, तो वह राष्ट्र की सबसे पवित्र धरोहर बन जाती है। हर स्थान पर वह अपने राष्ट्र की पहचान के रुप में जाना जाता है। केवल राजनीति में ही नही बल्कि धर्म ने भी उसे अपनी पहचान के मामले में भी अपने-अपने ध्वज को सर्वोपरि स्थान दिया है। युद्ध का मैदान हो या शान्ति की टेबल सभी स्थान पर उसे प्राथमिकता दी जाती है। यही कारण है कि भारतीय राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा आज के इस रुप में पहुँचने से पहले अनेक चरणों से गुजरा है। यह जानना हम सभी के लिए अत्यन्त ही रोचक है। हमारा राष्ट्रीय ध्वज अपने आरम्भ से किन-किन परिवर्तनों से गुजरा है! प्रथम संग्राम के समय सन! 1857 में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज बनाने की योजना बनी थी, परन्तु यह आन्दोलन असमय ही समाप्त हो गया था और उसके साथ ही वह योजना भी बीच में अटक गई। लेकिन बीसवीं शताब्दी के आरम्भ से तिरंगा अपने विकास यात्रा के दौरान भारत के राजनैतिक विकास का भी परिचायक बना रहा। हमारे राष्ट्रीय ध्वज की विकास यात्रा के कुछ ऐतिहासिक पड़ाव इस प्रकार रहा है:-

प्रथम चित्रित ध्वज

सर्वप्रथम सन् 1904 ई0 में मार्गरटे एलिजाबेथ नोबेल (स्वामी विवेकानन्द की शिष्या भगिनी निवेदिता) जो आयरलैण्ड की रहने वाली थी। द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रीय ध्वज कांग्रेस के अधिवेशन बनारस में किया गया था। सन् 1905 ई0 में कोलकाता के कांग्रेस अधिवेशन के समय भगिनी निवेदिता ने अधिवेशन स्थल पर स्वदेशी की प्रदर्शनी लगायी थी इस प्रदर्शनी में उन्होंने भारत का राष्ट्रीय ध्वज भी प्रदर्शित किया। यह ध्वज भगवा रंग का था। इसके मध्य में पीले रंग का वज्र बना हुआ था।

द्वितीय चित्रित ध्वज

कोलकाता फ्लेग, सन् 1906

7 अगस्त 1906 को पारसी बाग चौक (ग्रीन पार्क, कोलकाता) में कांग्रेस के अधिवेशन में यह ध्वज, श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी द्वारा फहराया गया था। इस ध्वज को लाल, पीले व हरे रंग की क्षैतिज पट्टियों से बनाया गया था। ऊपर की हरी पट्टी में आठ कमल, नीचे की लाल पट्टी में सूरज और चाँद बनाये गये थे। बीच की पट्टी पर वन्देमातरम् लिखा गया था।

तृतीय ध्वज, सन् 1907

22 अगस्त 1907 ई0 में जर्मनी के स्टुटर्गाट नगर में आयोजित मैडम भीखा कामा (जो पारसी परिवार से थी) उनके साथ निर्वासित किये गये कुछ क्रान्तिकारियों द्वारा तथा उन्होंने वीर सावरकर के साथ मिलकर बनाये गये भारतीय झण्डे को पहली बार विदेशी धरती पर फहराया गया। यह भी पहले ध्वज के समान ही था, सिवाय इसके कि इसमें सबसे ऊपर की पट्टी पर केवल एक कमल था।

किन्तु सात तारे सप्तऋषियों को दर्शाते थे। यह ध्वज बर्लिन में हुए समाजवादी सम्मेलन में भी प्रर्दशीत किया गया था और बाद में इसी ध्वज में परिवर्तन करके भारत

का राष्ट्रीय झण्डा बनाया गया।

चतुर्थ चित्रित ध्वज, सन् 1917

सन 1917 ई0 में भारतीय राजनैतिक संघर्ष ने एक निश्चित मोड़ लिया। डॉ. एनी. बेसेन्ट और लोकमान्य तिलक ने घरेलू-शासन आन्दोलन के समय चतुर्थ चित्रित ध्वज को फहराया इस ध्वज में 5 लाल और 4 हरी क्षैतिज पट्टियाँ एक के बाद एक और सप्तऋषि के अभि-वियास में इस पर सात सितारे थे। ऊपरी किनारे पर (बाँये खम्भे की तरफ) यूनियन जैक था। एक कोने में सफेद अर्ध-चन्द्र और सितारा भी था।

सन् 1921 में कांग्रेस की बैठक में पेश किया गया झण्डा

सन 1921 ई0 में कांग्रेस के बेजवाड़ा (वर्तमान विजयवाड़ा) सत्र के समय आन्ध्र प्रदेश के युवक पिंगली वैंकैया ने एक झण्डा बनाया (पाँचवाँ चित्रित) और महात्मा गाँधी को दिया, जो 1921 में कांग्रेस की बैठक में पेश किया गया। यह झण्डा दो रंगों का बना था।

लाल और हरा रंग, जो दो प्रमुख समुदायों अर्थात् हिन्दू और मुस्लिम का प्रतिनिधित्व करता था। गाँधी जी ने सुझाव दिया कि भारत के शेष समुदायों का प्रतिनिधित्व करने के लिए इसमें एक सफेद पट्टी व राष्ट्र की प्रगति का संकेत देने के लिए चरखा होना चाहिये।

छठवाँ चित्रित ध्वज

वर्ष 1931 में तिरंगे के इतिहास में एक स्मरणीय वर्ष है। तिरंगे धवज को भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रुप में मान्यता मिली। यह ध्वज जो वर्तमान स्वरूप का पूर्वज है। केसरिया, सफेद और मध्य में गाँधी जी के चलते हुए चरखे के साथ था। (छठवाँ चित्रित) यह भी स्पष्ट रुप से बताया गया था कि इसका कोई साम्प्रदायिक महत्त्व नहीं था।

भारतीय कांग्रेस का ध्वज

सन् 1931 ई. केसरिया सफेद और केन्द्र में एक चरखा के साथ हरे रंग का स्वराज ध्वज जो भारतीय कांग्रेस का ध्वज रहा है।

आजाद हिन्द

सन् 1943 - नेताजी सभाुष चन्द्र बोस द्वारा स्थापित आजाद हिन्द सरकार का राष्ट्र धवज। जिसमें ऊपर की पट्टी केसरिया, नीचे की पट्टी हरी बीच वाल सफेद पट्टी पर बाघ चित्रित है।

स्वतंत्र भारत का राष्ट्रीय-ध्वज

सन् 22 जलाई 1947 को संविधान सभा ने वर्तमान ध्वज को भारतीय राष्ट्र-ध्वज के रूप में अपनाया गया है। स्वतंत्रता मिलने के बाद इसके रंग और उनका महत्त्व बना रहा, केवल ध्वज में चलते हुए चरखे के स्थान पर सम्राट अशोक के धर्म-चक्र को स्थान दिया गया है। इस प्रकार कांग्रेस पार्टी का तिरंगा झण्डा अतंत: स्वतंत्र भारत का राष्ट्रीय-ध्वज बन गया।

'हिन्दुस्तान की आन, बान व शान तिरंगा'

इस नये ध्वज को देश के द्वितीय राष्ट्रपति सर्वपल्ली श्री राधाकृष्णन ने पुन: व्याख्या की, यथा राष्ट्र-ध्वज की ऊपरी पट्टी में केसरिया रंग है जो देशभक्ति और साहस को दर्शाता है, बीच की श्वेत पट्टी अशोक-चक्र के साथ शान्ति और सत्य का प्रतीक है। निचली हरी पट्टी उर्वरता और वृद्धि को दर्शाती है। अशोक-चक्र को प्रदर्शित करने का आशय यह है कि जीवन गतिशील है।

जनजाति विकास समिति, नागालैण्ड
सिगनल अंगामी बस्ती
रुम न0 325, सेक्टर-सी0
डीमापुर - 797112 : नागालैण्ड

❑

हमारे अन्दर आज सिर्फ एक ही इच्छा होनी चाहिए वह है मरने की इच्छा। ताकि हमारा देश जी सके।

-सुभाष चन्द्र बोस

मैं अपने देश की आजादी, दूसरों का शोषण कर के नहीं, ना ही दूसरे देशों को नीचा दिखा कर बल्कि मैं अपने देश की आजादी ऐसे चाहता हूँ कि अन्य देश मेरे आजाद देश से कुछ सीख सके।

-लाल बहादुर शास्त्री

कौन युवा राष्ट्रीय प्रश्नों के उत्तर बनेंगे?

-धर्मनारायण शर्मा

युवा शब्द वायु के अलट से बन जाता है। युवा तभी ओर तभी युवा माना जायेगा जब उनकी चाल, गति वायुरूप में हो। युवा तभी और तभी युवा माना जायेगा जब उसका जोश वायु के भीषण थपेड़ों जैसा हो। युवा तभी और तभी युवा माना जायेगा, जब अन्याय-अत्याचारों की अवस्था में पवन की शक्ति के समान अपनी शक्ति का प्रकटीकरण करें। युवाओं में शक्ति-बुद्धि के साथ वायु की शीतलता व वायु द्वारा विस्तारित सुगन्धी से समाज को सुवासित करने की पात्रता हो।

वर्तमान भारत युवा है। आज विश्व के समक्ष युवा भारत अधिष्ठित है। युवा भारत होने से छोटी-बड़ी घटनाओं पर भी तूफानी हलचल निर्मित हो रही है। क्यों हो रही है क्योंकि युवकों व युवतियों की रक्तवाहिनी में युवा रक्त प्रवाहित हो रहा है। युवकों में जोश होना स्वाभाविक है। अपने स्वाभाविक जोश को धारण करने वाले युवा यह भी सोचें कि आप ही राष्ट्र के भविष्य हैं। भविष्य को ध्यान रखकर हमें विध्वंस नहीं रचनात्मक बनना होगा। शक्ति के दो रूप हैं एक विध्वंसात्मक और दूसरा रचनात्मक। राष्ट्रनिर्माता एक रूप को धारणकर राष्ट्र की रक्षा और निर्माण नहीं कर सकता। शत्रु के सामने महाकाल और निर्माण वेला में ब्रह्मावतार बनना होगा।

जब वायु तूफान रूप धारण करती है तो समुद्र में भीषण लहरे विकराल रूप से विध्वंस लीला निर्माण करती हैं परन्तु वही वायु जब मन्दगति से बहती है तो समुद्र शान्त-गम्भीर बना आकर्षक व दर्शनीय बन जाता है। इसी प्रकार जब युवा अनुशासन हीन बना जोश में आकर तोड़फोड़ पर उतर आता है तो विध्वंस लीला निर्माण करता है परन्तु जब युवा ध्येय धारण कर अनुशासन के कूल-कगारों में रहकर रचनात्मक बन कार्य प्रवण होता है तो सृजन होता है।

जब नदी मंदगति से बहती है तो उसका कलकल निनाद कर्णप्रिय लगता है परन्तु वही नदी जब बाढ़ का रूप धारण करती है तो चारों ओर हाहाकार मचाती हैं। जीव-जन्तु, मानव कालकलवित होते हैं और खेती-कृषि ही नहीं ग्राम-नगरों की करोड़ों की सम्पदा का विध्वंस हो जाता है। वैसे ही युवामन मानव मर्यादा को छोड़कर अपनी शक्ति के अहम में आता है तो सामाजिक जीवन की श्रेष्ठताओं का लोप होने लगता है।

जब युवकों का जीवन जीवनोद्देश्यपरक बनता है तो मान-मर्यादाओं की रक्षा होती है। ध्येय हीनता पोषण नहीं भीषणता निर्माण करती है इसलिये अनिवार्य है कि युवामन ध्येयवादी-ध्येयधर्मी बनें। युवकों को महत्त्वाकांक्षी बनना होगा, तुच्छाकांक्षी नहीं। तुच्छाकांक्षा युवामन को संकुचित बनाती है तथा नकारात्मक बनाकर उसके जीवन में पलायन जगाती है। इस तुलना में महत्त्वाकांक्षा महत् को प्राप्त करने का भाव जगाती है। ऐसे महत्त्वाकांक्षी ही धर्म, अर्थ को प्राप्त करके मोक्ष को प्राप्त होते हैं। महत् की आध्यत्मिकधारा महत्त्वाकांक्षा से ही सृजित होती है।

आज युवकों में 'केरियर' निर्माण की प्रबल चाह सर्वत्र दिखाई दे रही है परन्तु यह चाह उसे मात्र अपने तक सीमित कर रही है। इस 'केरियर' निर्माण में कई बार अपना कूल, अपना देश-राष्ट्र भी कहीं दिखाई नहीं देता है। ध्येयवादी युवा संकुचित नहीं रहता है, उसका मन विशाल बना समाज राष्ट्र के उज्ज्वल 'केरियर' निर्माण में अपने व्यक्तिगत 'केरियर' को जोड़कर चलता है तथा अपनी प्रतिभा द्वारा राष्ट्रीय गौरव निर्माण करता है।

युवाओं में जब हिन्दुत्व निष्ठा जागृत होती है तो वह संस्कृति प्रेमी बनकर राष्ट्र-समाज के लिये अपने को समर्पित करता है। समर्पण यह उसके जीवन की दिशा बन जाती है। वह तन समर्पित, मन समर्पित और मेरा यह जीवन-जवानी समर्पित के भाव से परिपूर्ण बन न्योछावर की सीमा पार करता है।

ध्येयहीन युवा शॉर्टकट की राह पर चल रहे हैं। ऐसे युवाओं से कुछ भी सृजित नहीं होता है। ऐसे युवा ही अपसंस्कृति निर्माण करते हैं, ऐसे युवा ही भ्रष्टता के पथ

के पथिक बन राष्ट्र की नैया को मझधार में छोड़कर परे हो जाते हैं। इस प्रकार की प्रवृत्ति के युवा ही देशद्रोही, जयचन्दी वृत्ति धारणकर शत्रु के हाथों के हस्तक बनकर राष्ट्रघात करते हैं।

आज के युवा भारत के सामने अनेक 'यक्ष' प्रश्न खड़े हैं। महाभारत काल में युधिष्ठिर से यक्ष ने अनेक प्रश्न खड़े किये, जिनका युधिष्ठिर ने समाधान कारक उत्तर दिया था। आज देश में गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, दुराचार, पाखण्ड आदि अनेक यक्ष प्रश्न खड़े हैं। भारत के भविष्य युवकों को ही इनका उत्तर बनना होगा। परन्तु सवाल खड़ा है कौन युवा इन यक्ष प्रश्नों के उत्तर बनेंगे? राष्ट्र के इन यक्ष प्रश्नों का उत्तर व्यक्तिगत केरियर निर्माण में लगे युवकों द्वारा नहीं आयेगा। जो युवा लोभी, लालची तुच्छाकांक्षी, भ्रष्ट व छलि हैं वे युवक भी यक्ष प्रश्नों का उत्तर नहीं बन सकेंगे। वे युवा भी उत्तर नहीं बन सकेंगे जो सीमित उद्देश्य वाले हैं, जो आरामतलब हैं, जो दौलत में ही खेलते हैं, जो केवल ढपोलशंखी बने बातों के फोके फायर लगाते हैं, जो अहोरात्र स्वार्थपूर्ति में लगे रहते हैं वे स्वार्थी राष्ट्र के यक्ष प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकेंगे। अब प्रश्न खड़ा है इन यक्ष प्रश्नों का उत्तर कौन बनेगा व कौन देगा?

इन यक्ष प्रश्नों का उत्तर वे देंगे जो अपनी लाश पर खड़े होकर राष्ट्र के यौवन का आह्वान करेंगे। इन प्रश्नों का उत्तर वे देंगे जो अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं को अपने पैरों तले रौंद कर चलते हैं, जो युवा स्वार्थ की होली जलाकर चल रहे हैं, जो देश-धर्म पर अपना जीवन-जवानी समर्पित करने को चल पड़े हैं वे उत्तर देंगे। जो अध्ययन भी करते तो देश के लिये करते हैं, वे उत्तर देंगे, जो भारतमाता को जगन्माता बनाने की आकांक्षाओं से युक्त हैं वे उत्तर बनेंगे। जिनमें दैवी पागलपन जागा है, वे ही युवा यक्ष प्रश्नों का उत्तर बनेंगे। जो परिस्थिति की छाती चीरकर अपने पुरुषार्थ, पराक्रम से नये राजमार्गों के निर्माण करने हेतु मतवाले बने हैं, वे उत्तर देंगे जो साहसी, ध्येयवादी वीर विनायक सावरकर की तरह कष्टसाध्य जीवन जीने हेतु संकल्पबद्ध हैं। जो भगतसिंह, चन्द्रशेखर की तरह आवश्यकता पड़ने पर अपने जीवन का होम 'इदम् न मम् इदम् राष्ट्राय' के भाव से करने को सिद्ध हैं। वे उत्तर देंगे जो भारत माता के चरणों में अपने सुविकसित, सुगन्धित जीवन पुष्प को समर्पित करने को तैयार हैं। वे युवा इन यक्ष प्रश्नों का उत्तर देंगे जो अपना समय-शक्ति बुद्धि समाज-राष्ट्र देवता के चरणों में अपने आप को समर्पित करने के लिए सिद्ध हैं। जो द्वेष से परे बनकर समाज की विषमता को मिटाकर एकरस, समरस, एकात्म समाज जीवन निर्माण में लगे हैं, ऐसे विशालहृदयी, हिन्दुत्व धर्मी, अध्यात्मवादी, राष्ट्रीय धारा में पगे युवाही राष्ट्रजीवन के सभी यक्ष प्रश्नों का समाधान करके कल्याणकारी भारतीय राष्ट्र का प्रादुर्भाव कर सकेंगे। ❑

अखण्ड भारत मोर्चा ने किया पुतला दहन

अखण्ड भारत मोर्चा विश्वास नगर जिला द्वारा अकबरद्दीन ओवेसी के भडकाऊ बयान जिसमें प्रधानमंत्री को अमर्यादित बोल बोल है, इस पर रोष व्यक्त करते हुए, भीकम सिंह कॉलोनी में पुतला दहन किया गया, जिसका नेतृत्व जिला अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र सिंह विनोद ने किया, महामंत्री श्री विशेषवर शर्मा ने रोष व्यक्त करते हुए कहा कि ओवेसी जैसे लोग खाते हिन्दुस्तान का है और गाते पाकिस्तान की है।

जिला मंत्री अर्जुन चौटाला ने ओवेसी को चुनौती देते हुए कहा कि जिस दिन ओवेसी दिल्ली में आएगा उसका जूते से स्वागत किया जाएगा। इस प्रदर्शन में प्रमुख रूप से आर.टी.आई. प्रमुख श्री पवन कुमार कौल, मीडिया प्रभारी दीपक धींगान जिलाध्यक्ष मनोज, जिलामंत्री अंकित, संजीव, दर्शन उपस्थित रहे।

-अर्जुन चौटाला
जिला मंत्री 9654778153

क्या कश्मीर में बकरा पार्टी की लडाई अपने अंतिम दौर में पहुँच गई है?

-डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

मौलाना अबुल कलाम आजाद हिन्दुस्तान के पहले शिक्षा मंत्री थे। इससे पहले वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रधान भी रह चुके थे। मुसलमानों के वे बहुत बड़े नेता थे। उन्होंने भारत विभाजन का विरोध किया था। यही कारण था कि वे विभाजन के बाद पाकिस्तान नहीं गए और उन्होंने हिन्दुस्तान में रहना ही उचित समझा। हिन्दुस्तान ने भी उन्हें मुल्क का शिक्षा मंत्री बना कर उनका सम्मान किया। भारत विभाजन का विरोध वे दो कारणों से करते थे। उनका कहना था कि हिन्दुस्तान के जिस हिस्से को पाकिस्तान बनाया जाएगा, वहाँ तो पहले से ही मुसलमानों का राज है। अस्सी प्रतिशत मुसलमान वहाँ हैं। देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था भी लागू हो जाएगी तब भी वहाँ मुसलमानों का ही राज रहेगा। इसलिए पाकिस्तान बनाए जाने वाले इलाके में मुसलमानों के लिए भयभीत होने की कोई वजह नहीं है। लेकिन मुस्लिम बहुल इलाके हिन्दुस्तान में से निकल जाने के कारण, शेष बचे हिस्से में मुसलमानों की संख्या बहुत कम रह जाएगी। इसलिए आजाद हिन्दुस्तान में उनकी हैसियत में बहुत फर्क पड़ जाएगा। लेकिन उन जिनों मुसलमानों का नेतृत्व जिनके हाथ में था, उन्होंने मौलाना की एक न सुनी। विभाजन होकर रहा। मुसलमानों द्वारा ठुकरा दिए जाने के बावजूद मौलाना शेष बचे हिन्दुस्तान में मुसलमानों के हितों की अनदेखी नहीं कर सकते थे। इसलिए उन्होंने पाकिस्तान में न जाकर यहीं रहकर मुसलमानों के हितों के लिए लड़ना ज्यादा बेहतर समझा। लेकिन इसके साथ ही मौलाना ने हिन्दुस्तान में मुसलमानों की संरचना पर एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण टिप्पणी की जिसकी ओर बाद के अध्येताओं ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया। यह अनजाने में भी हो सकता है या फिर जानबूझकर कर भी हो सकता है। लेकिन भारत में मुसलमानों के बारे में, उनके व्यवहार या सामाजिकता के बारे में अध्ययन करने से पहले मौलाना की यह टिप्पणी धरातल का काम कर सकती है। मौलाना ने लिखा है, 'हिन्दुस्तान के 95 प्रतिशत मुसलमान हिन्दुओं की औलाद हैं। पाँच प्रतिशत मुसलमान विदेशी विजेताओं के साथ आए थे। बाद में वे पाँच प्रतिशत मुसलमान, जिनमें मेरा परिवार भी शामिल है, यहाँ हिल मिल गए।' कितने हिल मिल गए, यह प्रश्न विवाद का नहीं है। यदि वे ऐसा कहते हैं तो ठीक ही कहते होंगे। लेकिन एक

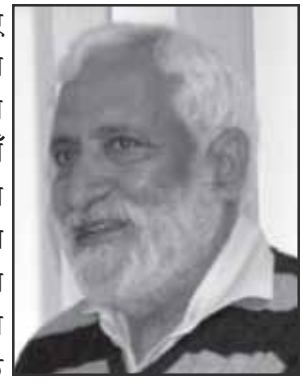

तथ्य उन्होंने लिखना शायद मुनासिब नहीं समझा। वह यह कि ये पाँच प्रतिशत मुसलमान जिनके पूर्वज हिन्दुस्तान को जीतने के लिए आए थे और उन्होंने उसे सचमुच जीत भी लिया था, अभी भी अपने आपके 95 प्रतिशत हिन्दुस्तानी मुसलमानों, जो असल में हिन्दुओं की ही औलाद हैं, का नेता मानते हैं। इनको लगता है कि इन हिन्दुओं की औलाद का नेतृत्व करने और इन्हें मार्गदर्शन प्रदान करने का खुदाई अधिकार इनके पास है। वे पूरे हिन्दुस्तान के नेता हैं, ऐसा तो वे अब सोच नहीं सकते। खासकर पाकिस्तान बनने के बाद तो बिल्कुल ही नहीं। लेकिन इन हिन्दुओं की औलादों के वे नेता हैं, यह बात उनके मनोविज्ञान में से नहीं निकलती। इस मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि में कश्मीर घाटी में पनप रही आतंकवाद की समस्या को समझना होगा।

जम्मू कश्मीर में केवल कश्मीर घाटी की चर्चा करना ही बेहतर होगा क्योंकि प्रदेश के केवल इस हिस्से में ही आतंकवाद का असर देखा जा सकता है। यह अलग बात है कि कश्मीर घाटी में भी, यह समस्या दक्षिणी कश्मीर के केवल चार जिलों तक सीमित है। कश्मीर घाटी के मुसलमानों की जनसंख्या भी, मौलाना के शब्दों का ही सहारा लेना हो तो, 95 प्रतिशत हिन्दुओं की औलाद है और पाँच प्रतिशत उन मुसलमानों की, जिनके पूर्वज कश्मीर को जीतने आए थे और उसे जीत कर यहीं बस गए। जीत कर यहीं बसने वाले अपनी पहचान छिपाते भी नहीं। वे गौरव से उसका प्रदर्शन करते हैं। सैयद तो इसमें

सबसे आगे हैं। वे अरब के सम्मानित कबीले से ताल्लुक रखते हैं। इसलिए अपने नाम के आगे बाकायदा लिखते हैं ताकि कोई गलती से भी उनको कश्मीरी न समझ ले। बाकी जो जिस देश से आया है या उसके जिस स्थान विशेष से आया है, उसकी पूँछ अभी भी अपने साथ चिपकाए घूमता है। मसलन गिलानी, हमदानी, करमानी, खुरासानी इत्यादि इत्यादि। कश्मीरी को डराने के लिए या फिर हर पल उनको याद दिलाने के लिए कि हमारे बाप दादा ने तुम्हारे बाप दादा को पराजित किया था। वे कश्मीरियों में हिलमिल पाए या नहीं, यह विवादास्पद है। सच तो यह है कि उनकी इच्छा कश्मीरियों में हिल मिल जाने की कभी थी ही नहीं बल्कि वे तो यह कोशिश करते रहे कि 95 प्रतिशत कश्मीरी इन पाँच प्रतिशत में घुलमिल जाएँ और चिनारों के विशालकाय पेड़ों को खजूर के पेड़ कहना शुरु कर दें। शारीरिक तौर पर कश्मीरियों ने चाहे इनके आगे पराजय स्वीकार कर ली लेकिन मानसिक रूप से कश्मीरियों ने इनके आगे हथियार नहीं डाले। वे अपने आपको आम कश्मीरी से श्रेष्ठ समझते हैं। कश्मीरियों को नियंत्रित करने के लिए वे समय-समय पर अनेक तरीके इस्तेमाल करते रहे हैं और अभी भी करते रहते हैं। मस्जिदों पर नियंत्रण और उनका अपनी रणनीति को आगे बढ़ाने में प्रयोग करना, सबसे प्रभावशाली तरीका है। कश्मीर घाटी में प्रत्येक छोटी बड़ी मस्जिद का एक वाईज होता है। सीधी-साधी भाषा में कहा जाए तो यह मस्जिद का इन्चार्ज होता है और मस्जिद में नमाज इत्यादि पढ़ाने के अलावा हम मजहबों को उपदेश भी देता है। कभी-कभी फतवे भी जारी करता है। अपने उपदेश में वह केवल मजहबी नुकतों पर बात करेगा, ऐसा कुछ नहीं है। अनेक बार तो वह मजहब को छोड़ कर बाकी सभी मुद्दों पर धुँआधार आग उगलता है। श्रीनगर की यह मस्जिद जामिया मस्जिद अर्थात् बहुत बड़ी मस्जिद है, इसलिए इनके वाईज भी साधारण वाईज न होकर मीरवाइज कहलाते हैं। इस्लामी देशों के आक्रमणों के बाद जब कश्मीर घाटी में मस्जिदें बननी शुरु हुईं तो जाहिर है उनके मीरवाइज भी बाहर से आने वाले अरबों, तुर्कों, पठानों और मध्य एशियाई कबीलों के मौलवी बनाए गए। ताकि इन मीरवाइजों के माध्यम से कश्मीरियों को नियंत्रण में रखा जा सके। ऐसे प्रयास इस्लामी विजयों के शुरुआती दौर से ही किए गए। लेकिन कश्मीरियों ने जितना संभव हो सका, अपने तरीके से इसका विरोध किया। उन्होंने अपने जियारत खाने खोल लिए। कश्मीरी जियारत खानों में नतमस्तक होने लगे और मीरवाइज कश्मीरियों के इस पतन पर छाती पीटते रहे। मौलवी मस्जिद में अरबों की जीत की कहानियाँ सुनाते रहे, कश्मीरी चरारे शरीफ में नुन्द ऋषि के आगे सिजदा करते रहे और लल्लेश्वरी के बाख रटते रहे। बाहर से आकर कश्मीर को जीतने वाले पाँच प्रतिशत मुसलमानों के सैयद घाटी में छाती चौड़ी करके इतराते थे तो 95 प्रतिशत हिन्दुओं की औलाद मुसलमानों ने अपने शेख आगे कर दिए। उनके पास ऊँचे कद का सैयद है तो इनके पास शेख हैं। शेख वह मुसलमान है जो ऊँची जाति के हिन्दू से मतान्तरित हुआ है।

कश्मीर घाटी के इतिहास में कई सौ साल बाद ऐसा वक्त आखिर आ ही गया जब एक शेख ने पाँच प्रतिशत के नेतृत्व को हाशिए पर धकेल कर 95 प्रतिशत हिन्दुओं की औलाद वाले कश्मीरी मुसलमानों का परचम फहरा दिया। (यह अलग बात है कि बाद में यही शेख, मोहम्मद अब्दुल्ला अपनी अलग डफली बजाने लगे) उस समय से आज तक मौलाना की शब्दावली में 95 प्रतिशत हिन्दुओं की औलाद वाले कश्मीरी मुसलमानों को शेर पार्टी कहा जाने लगा और पाँच प्रतिशत बाहर से आए मीरवाइजों, सैयदों और गिलानियों की पार्टी को बकरा पार्टी कहा जाने लगा। अपने वक्त में कश्मीरी शेख अब्दुल्ला ने सब कश्मीरियों को एकत्रित करके मीरवायजों को कश्मीर घाटी में उनकी असली जगह बता दी थी। एक मीरवाइज तो भाग कर पाकिस्तान में ही चला गया। मामला यहाँ तक बढ़ा कि कश्मीरी अपने आपको शेर पार्टी कहने लगे और मीरवाइजों की सफों में बैठे अरबों, इरानियों, तुर्कों, पठानों और मध्य एशियाई लोगों को बकरा पार्टी कहने लगे। लेकिन मीरवाइजों के नेतृत्व में गिलानियों खुरासानियों ने कश्मीरियों पर अपना शिकंजा कसने के प्रयास निरंतर जारी रखे और वे प्रयास अब भी जारी हैं। यह कश्मीरियों का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि

उनकी शेर पार्टी के शेख मोहम्मद अब्दुल्ला अमेरिकी साम्राज्यवादियों के हाथों में चले गए और बाद में स्वयं ही बकरा पार्टी की भाषा बोलने लगे। यदि वे ऐसा न करते तो शायद बकरा पार्टी का कश्मीर में अन्त हो जाता और इसके चलते इतिहास भी बदल जाता। शेर जब बकरे की भाषा बोलता है तो कितना दयनीय हो जाता है, इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। शेख अब्दुल्ला के बाद राज्य की कमान एक दूसरे कश्मीरी बख्शी गुलाम मोहम्मद के हाथों आई। वे अन्त तक शेर पार्टी के ही रहे और बकरा पार्टी से भिड़ते रहे। मीरवाइजों की जमात उनसे सबसे ज्यादा दुखी रहती थी। लेकिन दिल्ली की आन्तरिक राजनीति का शिकार होकर वे रुखसत हुए। उसके बाद कश्मीर की कमान उनके हाथों में ही रही जो सैद्धान्तिक रूप से बकरा पार्टी के साथ थे। फिर चाहे वे गुलाम मोहम्मद सादिक हों, या मीर कासिम हों या फिर मुफ्ती मोहम्मद सैयद हों। बीच में शेख अब्दुल्ला का कुनबा सत्ता में आता रहा लेकिन वह कुनबा अपने बाप की तरह स्थिर मन न होने के कारण कभी शेर पार्टी और कभी बकरा पार्टी के बीच भागता रहा। कालान्तर में उसका एक ही मकसद बचा किसी भी तरीके से सत्ता पर कब्जा जमाए रखना। उनके लिए सत्ता कश्मीरी अवाम की सेवा के लिए नहीं बल्कि अपने कुनबे का पेट भरने का जरिया बन कर रह गई। बकरा पार्टी का नेतृत्व इसके कारण भी बरकरार रहा। वैसे भी जब शेख अब्दुल्ला जेल में थे, तो जिस रायशुमारी फ्रंट ने जन्म लिया था, उसमें ज्यादातर बकरे ही थे। कश्मीर की वादियों को अपनी चरागाह मान कर मुँह मारने का इन बकरों को लम्बा मौका मिला। कभी जमायत-ए-इस्लामी के नाम पर, कभी हुर्रियत कान्फ्रेन्स के नाम पर या फिर किसी तीसरे चौथे नाम पर ये बकरे तंजीमबंद होते रहे। बकरा पार्टी कश्मीर में कोशिश करती रही कि कश्मीरी अपनी तहजीब भूल जाएँ, अपनी जुबान भूल जाएँ अपने संस्कार, अपनी कश्मीरियत भूल जाएँ। ये सब भूल कर वे अरबों की तहजीब सीख लें। उन्हीं की जुबान बोलने लगें। केसर की क्यारियों में खजूर उगाने लगें। लेकिन कश्मीर घाटी में इन्हें इसमें सफलता नहीं मिल सकी। ऐसे वक्त में बकरा पार्टी को शायद लगा होगा कि जिन कश्मीरियों ने विदेशी हुकुमरानों के भीषण अत्याचारों के बाद भी अपना मजहब नहीं छोड़ा है, अभी भी हिन्दू ही हैं और मंदिरों में जाते हैं, उन्हीं की छूत के चलते मतान्तरित हो चुके कश्मीरी अपनी जड़ें नहीं छोड़ रहे। आलम तो यह था कि अपने जीवन के अंतिम चरण में बकरों के साथ ही मिल जाने के बावजूद, सुपुर्द-ए-खाक हो जाने से पहले शेख मोहम्मद अब्दुल्ला अपनी आत्मकथा में गौरव से यह बताने का मोह नहीं छोड़ सके कि हम भगवान दत्तात्रेय की पूजा करने वाले ब्राह्मणों के वंशज हैं। तब बकरा पार्टी ने सरहद पार से आने वाले आतंकियों की मदद से उन सभी कश्मीरी हिन्दुओं को घाटी से बाहर कर दिया, ताकि छूत के इस कारण को ही दफना दिया जाए। सचमुच उन्होंने ऐसा कर दिखाया भी। उसके बाद वे कभी नुन्द ऋषि का जियारतखाना जला कर कश्मीरियों को डराते रहे, कभी जियारतखानों के खिलाफ जहर उगलते रहे लेकिन उन्हें पूरी कामयाबी कभी हासिल नहीं हुई। इसे सचमुच कश्मीरियों की बदकिस्मती कहना होगा कि उनके अपने ही कुछ लोग बकरा पार्टी के साथ मिल गए। लेकिन हर युग में, हर कौम के साथ होता आया है। जयचन्दों का इतिहास पुराना है।

लेकिन अब लगता है कश्मीर घाटी में बकरा पार्टी और कश्मीरियों की शेर पार्टी की लड़ाई अपने अन्तिम चरण में पहुँच गई है। बकरों के पास उनके विदेशी आकाओं के दिए हुए हथियार हैं, सऊदी अरब से आने वाला बेपनाह पैसा है। उसी के बल पर वे कश्मीरियों को या तो चुप करा देना चाहते हैं या फिर उन्हें गोली का निशाना बना रहे हैं।

क्रमशः

सभी सुधी पाठकों, विज्ञापनदाताओं को
रक्षाबन्धन, श्रीकृष्णजन्माष्टमी व स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

स्वतंत्रता दिवस से राष्ट्र

स्वच्छ राजनीति अभियान चलाएँ

-डॉ. रिखब चन्द जैन

अनेक स्वतंत्रता योद्धाओं के बलिदान और श्रम से हमें आजादी मिली। स्वतंत्रता दिवस पर उन सब शहीदों, योद्धाओं और उस समय के राष्ट्रीय नेताओं को नमन:। राजनैतिक स्वतंत्रता तो अधूरी स्वतंत्रता है। सच्ची आजादी के लिए गरीबी, शोषण, भ्रष्टाचार, दुराचार, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, कुशासन, क्षेत्रवाद, सामाजिक बुराईयाँ, अशिक्षा के अन्धकार से भी तो मुक्ति चाहिए। इन्हीं उद्देश्यों से भारत के लिए लोकतान्त्रिक व्यवस्था भारत के संविधान के माध्यम से 1950 में मिली।

भारत आज 130 करोड़ लोगों का दुनिया का सबसे बड़ा लोकतन्त्र हैं। भारतीय लोकतन्त्र में अनेक व्यवस्थाऐं, दुनियां के अनेक लोकतन्त्र यूरोप, अमेरिका जैसे देशों से भी कहीं बहुत आगे हैं। प्रत्येक व्यस्क नागरिक को मत का अधिकार है। संविधान के अनुसार राष्ट्र लिंग, रंग, जाति और क्षेत्र के भेदभाव से मुक्त है। चुनाव व्यवस्था स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं विश्वसनीय है। भारतीय संविधान में व्यक्ति के मूलअधिकारों जैसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता, जीने का अधिकार, सम्पत्ति का अधिकार, रोजगार का अधिकार, संवाद की स्वतंत्रता आदि की रक्षा के पूरे कानूनी प्रावधान है।

भारत का जनतंत्र जनप्रतिनिधियों के द्वारा संचालित होता है। समय के साथ लोकतन्त्र में जनप्रतिनिधियों का चरित्र, सेवाभाव, जनता के हित के प्रति समर्पणा आदि में बहुत गिरावट आई है। राजनैतिक लोगों के अपराधों में संलिप्तता से ऐसा लगता है कि राजनीति नि:स्वार्थ सेवा की जगह स्वयंहित और दलहित का साधन मात्र बन कर रह गई है। पिछले कई वर्षों के घटनाक्रमों से स्पष्ट होता है कि ग्राम पंचायत, जिला परिषद, विधानसभा, विधान परिषद, लोकसभा, राज्यसभा एवं अन्य लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं में अनेकानेक जघन्य अपराध करने वाले लोग, घोटाला करने वाले लोग, दुराचार-भ्रष्टाचार से लिप्त लोग अधिक से अधिक काबिज हो रहे है। राजनैतिक पार्टियों पर कोई लगाम नहीं। जेल में बैठे अपराधियों को

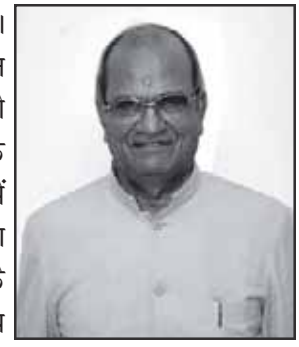

पार्टियां टिकट दे रही हैं। उन्हें वोट देने के लिए सदन में आने की व्यवस्थाऐं हो रही हैं। वर्षों तक अपराधिक मामलों को कोर्ट में दबायें रखते हैं। अपराधियों का जेल से छूटने पर जेल के द्वार से लेकर शहर के बीच तक भव्य समारोह और स्वागत होता है तथा अपनी अपराधिक प्रवृत्तियों को सही ठहराने के लिए जनाधार और राजनैतिक द्वेष का सहारा ले रहे है।

चुनाव आयोग भी धनबल और बाहुबल से निपट नहीं पा रहा हैं। चुनाव में प्राय: प्रत्येक जनप्रतिनिधि निर्धारित सीमा से कहीं गुणा अधिक खर्च कर रहे हैं। पार्टियों एवं जनप्रतिनिधियों का हिसाब गोलमोल है। चुनाव कीं टिकटें बिकती है। वोट बिकते हैं। MP, MLA की होर्स ट्रेडिंग होती है। राज्यसभा और विधान परिषद के चुनाव में भी वोट बिकते है। धनबल चलता है।

चुनाव के समय प्रत्याशी घर-घर जा कर विनम्रता दिखाते है। सेवा करने के वादे करते है। सुधार एवं कल्याण के सपने दिखाते है। चुनाव के बाद सब भूल जाते है। किसी से मिलते नहीं और सुनते भी नहीं। अपने ही घर भरने में लगे रहते है। अनेक राज्यों के सदन और संसद के सदन में 35% से 58% तक अपराधिकतत्व मौजूद है और यह प्रतिशत प्रति वर्ष बढ़ रहा है। मंत्री मंडलों में भी 20% से 30% तक अपराधिकतत्व मौजूद है। ऐसे जनप्रतिनिधियों से जनता क्या उम्मीद कर सकती है? क्या जनता का कल्याण होगा? राजनीति में परिवारवाद भी कुछ एक-दो पार्टी को छोड़कर बढ़ता ही जा रहा है।

चुनाव आयोग, विधि आयोग एवं संविधान आयोग तथा अन्य अध्ययन समितियों के प्रस्ताव 30 से अधिक वर्षों से पेन्डिंग है। सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट के आदेशों

के बावजूद राजनीति में अपराधों से मुक्ती का कोई प्रयास नहीं हो रहा है। कानून नहीं बन रहे है। लोकपाल की व्यवस्थाएं बड़े संघर्ष के बाद एक-दो राज्यों में ही नाम मात्र के लिए शुरू हुई है। देश के प्रत्येक क्षेत्र में शासन-प्रशासन, अर्थव्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था, पुलिस, सेना, स्वास्थ्य सेवाएं, ग्रामीण विकास, गरीबी उन्मूलन आदि रिफॉर्म्स बहुत ही धीमी गति से हो रहे है। जनकल्याण के लिए यह सब सुधार आवश्यक है। एक दम से सुधार हो, टुकड़ों में नहीं।

देश में 99% से भी अधिक लोग ईमानदार है फिर भी देश में 300-400 राजनैतिक परिवार, करीब 100 व्यावसायिक परिवार, करीब 50 मीडिया ग्रुप और 5-6 राष्ट्रीय पार्टियां एवं 8-10 क्षेत्रिय पार्टियां पूरी तरह से काबिज है। गरीबी हटने का नाम नहीं। गरीबी वास्तव में सरकारी आकड़ों से कहीं अधिक या दूनी तो अवश्य है। गरीबों की जरूरतें एवं इच्छायें भी आज के भौतिक वातावरण में बढ़ रही है।

देश का सौभाग्य है कि आज भी काफी अच्छी संख्या में नि:स्वार्थ, सेवाभावी, राष्ट्रभक्त जनप्रतिनिधि एवं राजनेता सुशासन के लिए प्रयासरत है एवं लोकतन्त्र में जन आकांक्षाओं को पूरी करने के लिए समर्पित है। जरा सोचिये? अगर आज हमारी विधानसभा और संसद में डॉ. भीमराव अम्बेडकर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जवाहर लाल नेहरु, दीनदयाल उपाध्याय, श्यामाप्रसाद मुखर्जी, सरदार पटेल, गुलजारीलाल नन्दा, डॉ. राम मनोहर लोहिया, अटल बिहारी वाजपेयी, लाल कृष्ण आडवाणी और नरेन्द्र मोदी जी जैसे जननेता अधिक से अधिक सांसद और विधायक होते तो भारत का विकास कितना जल्दी होगा? संसद, विधानसभा और पंचायत में अच्छे लोगों के लिए रास्ता बनायें। गलत लोगों के लिए रास्ता बंद हो। इसी से बदलाव की रफ्तार बढ़ेगी। सरकार, चुनाव आयोग और विधि आयोग ध्यान दें।

गत वर्षों में जो चुनाव सुधार एवं राजनैतिक सुधार हुए है वो सारे के सारे कोर्ट के आदेशों के आधार पर हुये। उच्चतम कोर्ट के आदेशों को भी अध्यादेश (Ordinance) के रास्ते निरस्त कर दिए जाते है। सभी पार्टी के अगुवा नेता अपराध मुक्त राजनीति की बात तो हर मौके एवं हर एक प्लेटफार्म से करते हैं परन्तु कानूनी बदलाव के लिए टालमटोल ही रहती है।

अत: मीडिया (प्रेस, ऑडियों विज्युवल, सोशल मीडिया) जो कि लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ कहलाता है। राजनीति को अपराधमुक्त करने की जिम्मेवारी संभालनी चाहिए। मीडिया आज के युग में बनाने और बिगाड़ने की ताकत रखता है। सभी मीडिया के लोगों को लोकतन्त्र में अच्छे लोगों के लिए स्थान बनाने और अपराधी, अवांछित लोगों के लिए सत्ता पर काबिज होना असम्भव बनाना चाहिए।

लोकतन्त्र का अन्तिम रक्षक सजग सतर्क नागरिक है। ऐसे सजग प्रबुद्ध नागरिक आगे आयें और अपने क्षेत्र में अपराधमुक्ती की मुहिम चलाये। इसके लिए अगर प्रत्येक जिले की बार ऐसोसियेशन चार-पाँच सक्रिय निष्पक्ष गैर राजनैतिक लोगों की समिति बनाकर ''वाच एण्ड वार्ड'' की भूमिका निभायें। प्रबुद्ध नागरिकों को भी शामिल करें। गलत अपराधी, अवांछित व्यक्ति को अगर पार्टी टिकट देती है, तो ऐसी वकीलों की समिति ऐसे गलत प्रत्याशी की हार सुनिश्चित करें। अच्छे प्रत्याशियों को टिकट दिलवायें। राजनैतिक पार्टियों एवं प्रशासन पर नागरिक अंकुश प्रभावी बनायें। किसी भी व्यक्ति के लिए गलत उद्देश्य से टांग खिंचाई न करे, न करने दे। प्रशासन एवं सत्ता में भी दागी लोगों पर उचित कानूनी कार्यवाही/ प्रशासनिक प्रक्रिया हो ऐसा भी तय करें।

अगर देश के प्रत्येक जिले स्तर पर नागरिक सजगता ''स्वच्छ राजनीति की पहल'' (Initiative for Clean Politics) सफल होता है तो अपराधिकरण की समस्या सामाजिक पहल से ही समाप्त हो जायेगी। राजनीतिज्ञों की इसके लिए इच्छा शक्ति की कमी का तो यही एक सही रास्ता है राजनीति को अपराध मुक्त कराने का। लोकतन्त्र मजबूत होगा। जनता की उम्मीदे पूरी होगी। सही स्वतन्त्रता आयेगी। लोग निडर, निर्भर, स्वस्थ, शिक्षित, समृद्धि के रास्ते पर होगें। अभाव, गरीबी, शोषण मुक्त भारत होगा।

जय हिन्द

अध्यक्ष - भारतीय मतदाता संगठन

❑

'रोजा इफ्तार और साम्प्रदायिक सौहार्द'

'रोजा इफ्तार' जो केवल मुस्लिम सम्प्रदाय का मजहबी कार्यक्रम होता है जिसमें पूरे दिन का उपवास (रोजा) रखा जाता है और फिर शाम को भोजन सामग्री ग्रहण करना आरंभ किया जाता है, इसको इफ्तार (रोजा खोलना) कहते है। जब यह कार्यक्रम सामूहिक रुप से विभिन्न नेताओं व अधिकारियों द्वारा बड़े स्तर से आयोजित किया जाता है तो वह 'इफ्तार पार्टी' हो जाती है। परंतु इस अवसर पर प्राय: सामूहिक कार्यक्रम करने वालों का मुख्य लक्ष्य राजनैतिक लाभ उठाना होता है। लेकिन क्या कभी मुस्लिम संप्रदाय ने अन्य धर्मानुयाईयों की भावनाओं का सम्मान रखते हुए उनके त्योहारों आदि पर कभी इस प्रकार की सहृदयता का परिचय दिया है? उल्टा अनेक गैर मुस्लिम धार्मिक अवसरों व शोभा यात्राओं पर बाधायें ही उत्पन्न करके साम्प्रदायिक दंगे अवश्य भड़के है।

हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी ने पूर्व प्रधानमंत्रियों के समान अपने 3 वर्ष के कार्यकाल में अपने निवास व कार्यालय में 'रोजा इफ्तार' नही किया व न ही इसमें भाग लेने कहीं जाते है। उनका यह संकल्प उनके 'हिन्दू राष्ट्रवादी' होने को सार्थक करता है। इन जटिल राजनैतिक परिस्थितियों में जिस दृढ़ता से वे अपने इस संकल्प पर टिके हुए है वह अपने आप में एक सशक्त व्यक्तित्व का परिचय कराता है। परंतु राजनीति की विवशता के कारण मोदी जी के मन्त्री मंडल के अन्य कुछ साथी रोजा इफ्तार का आयोजन भी करते है और कुछ ऐसे आयोजनों में भाग भी लेते रहते है। राष्ट्रपति जी भी अपने को ऐसे आयोजनों से पृथक नही रख पातें? इसी कड़ी में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी न तो इफ्तार का कोई आयोजन किया और न ही ऐसे किसी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। जबकि राज्यपाल सहित अन्य कुछ मंत्रियों ने इफ्तार का आयोजन भी किया और उसमें भाग भी लेते रहें। परंतु यह दुखद है कि पिछले वर्ष के समान इस वर्ष भी अनेक स्थानों पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा भी रोजा इफ्तार का आयोजन किया गया। 'रोजा इफ्तार' ऐसे आयोजन केवल साम्प्रदायिक सौहार्द बढ़ाने की मृगमरीचिका को ही पुष्ट करते है।

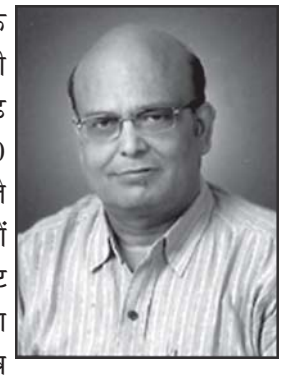

लेकिन इस्लामिक आतंकवाद के प्रखर विरोधी अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने अपने देश की 20 वर्ष पुरानी परंपरा को तोड़ते हुए इस बार ईद पर मुसलमानों को प्रसन्न रखने के लिये व्हाइट हाऊस में इफ्तार पार्टी का आयोजन नही करके विश्व को एक सार्थक संदेश दिया है। उनका स्पष्ट मत है कि जब मुसलमान अन्य धर्मावलंबियों के उत्सव व त्योहार आदि पर अन्य धर्मावलंबियों के लिये कोई स्वागत समारोह आदि नही करते तो फिर वे क्यों उनके इस पर्व का आयोजन करके उनका तुष्टिकरण करके उनको उत्साहित करें? यह सब आज इसलिये अधिक महत्त्व का विषय है क्योंकि मोदी जी व श्रीमान ट्रम्प दोनों ने अपने-अपने देश में राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित करने का संकल्प लिया है। इन दोनों राष्ट्रनायकों के लिए 'राष्ट्र प्रथम' का भाव ही सर्वोच्च है।

आज भारत सहित विश्व के अनेक प्रजातांत्रिक देशों में जनसंख्या बल के महत्त्व को समझना चाहिये क्योंकि मुसलमानों की बढ़ती जनसंख्या व उनकी एकजुट वोटो के लिये सत्तालोलुप राजनेता उनकी हर अच्छी-बुरी व उचित-अनुचित स्थिति में उनके लिए सबसे आगे खड़ें होते है। इसलिये अधिकांश लोकतांत्रिक व्यवस्था वाले राष्ट्रों में मुसलमान अपनी-अपनी जनसंख्या प्रजनन व घुसपैठ द्वारा बढ़ाने में सक्रिय है। हमारे देश में बिखरे हुए हिन्दू वोट और उनके घटते जनसंख्या अनुपात पर कोई नेता आकर्षित नही होता और हिंदुओं के त्योहारों पर ये नेता रोजा इफ्तार जैसा कोई भी सामूहिक धार्मिक आयोजन भी नही करते। क्या यह उचित नही होगा कि हिंदुओं के लिये इन नेताओं व अधिकारियों आदि को 'दीपावली मिलन', 'होली मिलन' व 'नवरात्र भोज उत्सव' जैसे विशाल आयोजन करके राष्ट्र की संस्कृति की रक्षा करनी

शेष पृष्ठ 26 पर....

जीतने को आतंकवाद से जंग, अब तो बदलो रंग-ढ़ंग

'अमरनाथ यात्रियों पर आतंकी हमला। अनेक जाने गई, अनेक घायल।' इसने-उसने-सबने इस घटना की कड़ी निंदा की। सरकार ने कड़ी कार्यवाही की चेतावनी दी। अनेक स्थानों पर विरोध प्रदर्शन। विरोधियों ने सरकार को कोसा।

उपरोक्त में कुछ भी नया नहीं है। नई है तो तारीख। दरअसल पिछले अनेक दशकों से यही दृश्य, यही समाचार बार-बार हमारे सामने आते रहे हैं और हम भी हर बार एक कर्मकांड की तरह कुछ भुनभुनाकर, कुछ छटपटाकर फिर से अपने-अपने काम में लग जाते हैं। हमारी छटपटाहट की सीमा है लेकिन आतंकवाद की कोई सीमा नहीं है। कड़ी निंदा की कोई सीमा नहीं है। टीवी चैनलों द्वारा सनसनी फैलाने की कोई सीमा नहीं है। मजेदारी यह कि सब अपनी-अपनी सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए भी आहत जनता से शांति बनाये रखने यानी सीमाओं में बने रहने की अपेक्षा करते हैं। वैसे जनता के पास इसके अतिरिक्त है भी क्या? अगर सवाल उठेगा कि भारत में आतंकवाद क्यों हैं तो जवाब मिलेगा, 'आतंकवाद एक वैश्विक समस्या है। यूरोप, एशिया, अफ्रीका, हर जगह आतंक है। हम पूरी ताकत से लड़ रहे हैं और आतंकवाद को समाप्त करके ही दम लेंगे।'

यह सच है कि आतंकवाद सर्वत्र है। लेकिन हमें अपने दिल पर हाथ रखकर आपसे पूछना चाहिए कि 'क्या हम वास्तव में ही आतंकवाद को समाप्त करने के लिए लड़ रहे हैं?' राजनीति इस प्रश्न का सही उत्तर होंठो तक नहीं आने देना चाहती क्योंकि सवाल वोट बैंक का है। यदि हम वास्तव में ही ईमानदार हैं तो यहाँ आतंकवाद टिक ही नहीं सकता। जब कोई उससे सख्ती से निपटने का प्रयास करता है तो शेष कभी दानवों के मानवाधिकारों की दुहाई देने लगते हैं। तो कभी उसे साम्प्रदायिक रंग देकर आतंकवाद से युद्ध के वातावरण को मसखरी में बदलने का हरसंभव प्रयास करते हैं। जो आतंकवाद को समाप्त न करने के लिए सरकार को दोषी ठहरा रहे हैं क्या वे बता सकते हैं कि दुनिया के किस देश में सख्ती के बिना आतंकवाद को समाप्त किया गया है? आखिर कहाँ सुरक्षा बलों पर पत्थर बरसाने वालों को गुलाब भेंट किये जाते हैं? जो देश तोड़ने की बात ही नहीं करें, अपनी हरकतों से ऐसा प्रयास भी करें उनसे सख्ती से निपटे तो सरकार 'संवेदनहीन' और यदि वे मनमानी करते हुए आतंक फैलाये तो सरकार 'लापरवाह' स्पष्ट है कि आतंक से हम अपनी लड़ाई आधे-अधूरे मन से ही लड़ रहे हैं। हमारा सरकार विरोध राष्ट्र विरोध का रूप धारण कर आतंकवाद को बल प्रदान करता है।

यह आश्चर्य नहीं तो और क्या है कि बस चालक के मजहब की बात तो जोर शोर से उछाली जा सकती है लेकिन बस पर हमला करने वाले आतंकवादी के मजहब की बात नहीं की जा सकती। हाँ, जब कोई अपराधी प्रेमविवाह के लिए अपने पूर्वजों का धर्म त्याग दे और बाद में आतंक से जुड़ जाये तो उस आतंकवादी के पकड़े जाने पर उसके पूर्वजों के धर्म को बदनाम करने के लिए उस धर्म की चर्चा जरूर की जायेगी जिसे वह आतंकी धोखा दे चुका है। यदि यह नियम माना जाये तो केवल आतंकी, अपराधी ही नहीं चर्च, मस्जिद या किसी भी धार्मिक स्थल पर जाने वाले इस देश के हर व्यक्ति के पूर्वज भी कभी न कभी हिंदू ही थे तब क्यों न उन्हें भी हिंदू ही कहा जाये? लेकिन नहीं, हमारी रूचि राष्ट्रीयता और मानवता को बचाने से अधिक अपने वोटबैंक को बचाने में है। ऐसे में आतंकवाद को मिटाने के हम नारे जरूर लगा सकते हैं। सरकार को कोस सकते हैं। शहीदों के परिवारों के प्रति सहानुभूति दर्ज करा सकते हैं। मुआवजा दे सकते हैं। लेकिन आतंकवाद का बाल भी बांका नहीं कर सकते।

आतंकवाद के प्रति सहिष्णुता शून्य प्रतिशत होनी चाहिए लेकिन भारत में मीडिया विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दोषियों के पक्ष में अनावश्यक माहौल बनाने का काम करता है। दोषी के कुकृत्य को अनदेखा करते हुए उसकी जाति, उसके धर्म, उसके प्रांत, भाषा के कारण उसे पीड़ित बताना अथवा उसके प्रति सहानुभूति का माहौल बनाना उचित नहीं कहा जा सकता। आतंकवाद से वही राष्ट्र निपटने की दिशा में अपना कदम बढ़ा सकता है जहाँ 'राजनीति में मत भिन्नता लेकिन राष्ट्रनीति में

एकता' हर नागरिक का संकल्प हो। हर घटना पर प्रतिक्रिया देते हुए हम अपराधी के धर्म या जाति को नहीं केवल और केवल अपराध को देखे। हम सब समझे कि धर्मनिरपेक्षता का अर्थ अपने राजनैतिक स्वार्थ और लाभ-हानि के आधार पर निर्णय लेना नहीं बल्कि गलत को गलत कहना है। जो लोग पूरी दुनिया को एक झण्डे के नीचे लाने के नाम पर उन्माद फैलाना चाहते हैं उनके प्रति हमें दोटूक फैसला करना होगा कि हम उसके विरोध में है या नहीं। यदि हम ऐसी मानसिकता के विरोधी नहीं हैं तो हमें उनका समर्थक क्यों न माना जाये? आतंकवाद को धर्मयुद्ध (जेहाद) कहना मानवीय अपराध है और इस राह पर चलकर यदि कोई धर्मराज स्थापित करने का दावा करता है तो उसकी लगाम तत्काल कसे जाने की जरूरत है। जरा सी लापरवाही भी निश्चित रूप से आत्मघाती साबित होगी।

आतंकवाद को साफ करने के लिये पहले राजनीति की सफाई जरूरी है। धर्म का सार्वजनिक प्रदर्शन, उन्मादी नारों और भाषणों के साथ-साथ राष्ट्रीय ध्वज का अपमान करने तथा देशद्रोही नारों का किसी भी कीमत पर न सहन करने का संदेश दिये बिना परिवर्तन की आशा करना स्वयं को धोखा देना है। इस्राइल या अमेरिका के तौर तरीकों की प्रशंसा करने से ही बात बनने वाली नहीं है। स्वयं को सक्षम, सजग और शक्तिशाली बनाना हर स्वाभिमानी राष्ट्र का प्रथम कर्तव्य होता है। आधुनिकतम संसाधनों से सीमावर्ती क्षेत्रों की कड़ी चौकसी के साथ-साथ सुरक्षा बलों को खुली छूट दी जानी चाहिए।

ध्यान रहे जब से दुनिया बनी है तब से आज तक ऐसा कोई राष्ट्र नहीं हुआ जहाँ बंधे हाथों से सेना ने कोई युद्ध जीता हो। स्थायी और सक्षम रक्षामंत्री की ओर से अपने सुरक्षा बलों को 'सिर उठाने वाले हर देशद्रोही के फन को तत्काल निर्दयता से कुचलने' के स्थायी आदेश दिये जाने की आवश्यकता है। बच्चे-बच्चे तक यह संदेश जाना चाहिए कि आतंक से जुड़े किसी भी व्यक्ति को महिमा मंडित करने का एकमात्र अर्थ आतंकवाद का सहयोगी होना है। क्योंकि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मनमानी नहीं हो सकती। स्वतंत्रता के साथ कुछ जिम्मेवारियाँ है तो उसकी सीमाएँ भी है। सीमाओं का अतिक्रमण विनाशकारी होता है। अतिक्रमण चाहे आतंकवादियों द्वारा किया जा रहा हो या मानवाधिकारों के नाम पर आतंकवाद के समर्थन में चलाई जा रही मुहिम हो। सरकार और मीडिया का प्रथम मानवाधिकारी कर्तव्य अपने निर्दोष नागरिकों की सुरक्षा है, न कि आतंकवादियों के मानवाधिकारों की सुरक्षा के नाम पर रात-रात भर अदालतों को जगाने और अनावश्यक सनसनी का माहौल बनाने वालों को प्रचार देना है। आतंक की विषबेल को नष्ट करने के लिए जहाँ भी नागों की बामी होगी वहाँ सर्जिकल स्ट्राइक रूपी बम डालना प्रथम कर्तव्य होगा।

हवाओं में भी यह गूंजना चाहिए कि जो भी हमारे राष्ट्र की आन बान शान के विरूद्ध षड़यंत्र करता है वह राष्ट्रद्रोही है। पाक अधिकृत कश्मीर सहित भारत की धरती का एक-एक इंच हमारा है। जिसे भारत में रहना स्वीकार न हो वह स्वयं निर्णय करें कि उसे पाकिस्तान या जहन्नुम कहाँ जाना है? सेना को उसकी इच्छा तत्काल पूरी करने की छूट होनी चाहिए क्योंकि हम अपने ध्वज का अपमान किसी भी कीमत पर सहन नहीं कर सकते। ध्यान रहे, कभी राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर जी ने कहा था-

हम न किसी का चाहते तनिक, अहित, अपकार।
प्रेमी सकल जहान का भारतवर्ष उदार।।
सत्य न्याय के हेतु, फहर फहर ओ केतु।
हम विरचेंगे देश-देश के बीच मिलन का सेतु।।
पवित्र सौम्य, शांति की शिखा, नमो, नमो!
नमो स्वतंत्र भारत की ध्वजा, नमो, नमो!
तार-तार में हैं गूंथा ध्वजे, तुम्हारा त्याग।
दहक रही है आज भी, तुम में बलि की आग।।
सेवक सैन्य कठोर, हम एक सौ पच्चीस करोड़।
कौन देख सकता कुभाव से ध्वजे, तुम्हारी ओर।।
करते तब जय गान, वीर हुए बलिदान।
अंगारों पर चला तुम्हें ले सारा हिन्दुस्तान!
प्रताप की विभा, कृषानुजा, नमो, नमो!
भारत की ध्वजा, नमो, नमो!

-डॉ. विनोद बब्बर
संपर्क- 09868211911, 7892170421
rashtrakinkar@gmail-com
ए-2/9ए, हस्तसाल रोड,
उत्तम नगर नई दिल्ली-110059

तुष्टीकरण की आग में जल रहे हैं पश्चिम बंगाल के हिंदू

-लोकेन्द्र सिंह

रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, सुभाषचंद्र बोस और रविन्द्र नाथ ठाकुर की जन्मभूमि पश्चिम बंगाल आज सांप्रदायिकता की आग में जल रही है। वहाँ हिंदू समुदाय का जीना मुहाल हो गया है। यह स्थितियाँ अचानक नहीं बनी हैं। बल्कि सुनियोजित तरीके से पश्चिम बंगाल में हिंदू समाज को हाशिए पर धकेला गया है। यह काम पहले कम्युनिस्ट सरकार की सरपरस्ती में संचालित हुआ और अब ममता बनर्जी की सरकार चार कदम आगे निकल गई है। आज परिणाम यह है कि पश्चिम बंगाल के सीमावर्ती इलाकों में हिंदू अल्पसंख्यक ही नहीं हुआ है, अपितु कई क्षेत्र हिंदू विहीन हो चुके हैं। राजनीतिक दलों की देखरेख में बांग्लादेशी मुस्लिमों ने सीमावर्ती हिस्सों में जो घुसपैठ की जा रही है, उसके भयावह परिणामों की आहट अब सुनाई देने लगी है। मालदा, उत्तरी परगना, मुर्शिदाबाद और दिनाजपुर जैसे इलाकों में जब चाहे समुदाय विशेष हंगामा खड़ा कर देता है। घर-दुकानें जला दी जाती हैं। थाना फूंकने में भी उग्रवादी भीड़ को हिचक नहीं होती है। दुर्गा पूजा की शोभायात्राओं को रोक दिया जाता है। पश्चिम बंगाल की यह स्थिति बताती है कि सांस्कृतिक और बौद्धिक रूप से समृद्ध यह राज्य सांप्रदायिकता एवं तुष्टीकरण की आग में जल रहा है। सांप्रदायिकता की इस आग से अब पश्चिम बंगाल का हिंदू झुलस रहा है। अपने उदारवादी स्वभाव के कारण इस प्रकार के षड्यंत्रों को अनदेखा करने वाले हिंदू समाज का मानस अब बदल रहा है। भविष्य में पश्चिम बंगाल में इस बदलाव के परिणाम दिखाई दे सकते हैं। आप इस संस्मरण से भी समझ सकते हैं कि कैसे पश्चिम बंगाल का हिंदू जाग रहा है। उसे अपने हित-अहित दिखाई देने लगे हैं।

अमरकंटक में मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ की सीमा पर स्थित 'कबीर चबूतरा' दर्शनीय स्थल है। सामाजिक कुरीतियों पर बिना किसी भेदभाव के चोट कर समाज को बेहतर बनाने का प्रयास जिन्होंने किया, ऐसे संत कबीर के कारण इस स्थान का अपना महत्त्व है। कबीर साहेब

सबको एक नजर से देखते हैं। प्रत्येक पंथ और धर्म की विसंगतियों पर एक समान चोट करते हैं। कबीर निराकार के उपासक और भगवान राम के भक्त थे। कबीर अपनी वाणी और व्यवहार से मूर्तिपूजा और कर्मकाण्ड का यथासंभव विरोध करते थे। मूर्तिपूजा को खारिज करती एक साखी बहुत प्रसिद्ध है-**'पाहन पूजै हरि मिले, तो मैं पूजूं पहार। ताते यह चाकी भली, पीस खाए संसार'** भारत में जिस प्रकार मस्जिद पर ध्वनि विस्तारक यंत्र (लाउड स्पीकर) लगाकर एक दिन में पाँच समय अजान पढ़ी जाती है, उस पर भी कबीर साहेब ने पूरी कठोरता से चोट की है। गायक सोनू निगम आज जब अजान पर सवाल उठाते हैं, तब हमारा समाज किस तरह प्रतिक्रियाएं देता है, यह हम सबने देखा। लेकिन, अपने समय में कबीर ने कितनी दृढ़ता से अजान के औचित्य को संदेह के घेरे में रखा था, इसे उनके एक दोहे में देखा जा सकता है-**'कांकर पाथर जोरि कै मस्जिद लई बनाय। ता चढि मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय'** बहरहाल, कबीर के दर्शन पर कभी और बात की जा सकती है। अभी यह बताता हूँ कि कबीर चबूतरा और पश्चिम बंगाल में धधक रही सांप्रदायिक आग में क्या संबंध है?

सुबह सात बजे का समय होगा, जब हम कबीर चबूतरा पहुँचे थे। प्राकृतिक सौंदर्य से समृद्ध यह स्थान मन को भा गया। मैं यहाँ एक कुण्ड के किनारे खड़े होकर हम इस प्राकृतिक वातावरण में विद्यमान कबीर तत्व को आत्मसात करने का प्रयास कर रहा था। थोड़ी देर बाद यहाँ चहल-पहल होने लगी। एक के बाद एक, कई परिवार और धार्मिक पर्यटक समूह यहाँ आए। यहीं एक ऐसे परिवार से मिलना हुआ, जिसने बहुत पीड़ा के साथ पश्चिम बंगाल के हालात बयान किए। जब उस परिवार के लोग कबीर कुण्ड के पास खड़े होकर इस स्थान की अनुपम छटा के संदर्भ में बातचीत कर रहे थे, तभी समझ

आ गया कि यह लोग पश्चिम बंगाल से आए हैं। पवित्र नगरी अमरकंटक के सौंदर्य का रसपान करने के लिए यूँ तो देशभर से प्रकृति प्रेमी और धार्मिक पर्यटक आते हैं, परंतु इनमें मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, ओडीसा और पश्चिम बंगाल से आने वाले पर्यटकों की संख्या अधिक रहती है।

'आप बंगाल से हैं?' बातचीत शुरू करने के लिए मैंने उनसे पूछ लिया।

'हाँ।' उन्होंने बहुत ही संक्षिप्त उत्तर दिया। लेकिन, चेहरे पर भाव प्रसन्नता के थे।

'बंगाल में कहाँ से हैं?' मैंने आगे पूछा।

'मालदा से।' उन्होंने फिर से संक्षिप्त उत्तर दिया।

'मालदा तो पिछले बरस बहुत चर्चा में रहा। मुस्लिम दंगे के कारण। बहुत उत्पात किया था। थाने-वाने में भी मारपीट कर दी थी। लोगों के दुकान-मकान जला दिए थे।' मालदा का इस तरह जिक्र करके मैंने उनकी प्रतिक्रिया जाननी चाही। मालदा के दंगे को उन्होंने नजदीक से देखा था। इसलिए सच बताने के लिए वह मेरे समीप आ गए।

'आपने सही कहा। आज भी हालात बहुत खराब हैं। ममता की तुष्टीकरण की नीति का परिणाम है यह। पश्चिम बंगाल में कई इलाकों में हिंदुओं के हालात बहुत खराब हैं।'

मैं कुछ और कहता उससे पहले ही उन्होंने आगे बताया।

'मालदा में बहुत दंगा हुआ था। हिंदुओं के दुकान जला दिए थे। कालियाचक थाने पर कब्जा कर वहाँ बम फोड़े गए थे। दरअसल, पश्चिम बंगाल की तृणमूल कांग्रेस सरकार वोटों की खातिर मुस्लिम समाज के तुष्टीकरण में लगी है। स्थिति यह है कि अब लोग ममता को भी मुस्लिम मानने लगे हैं।' यह सब बताते हुए उस व्यक्ति के चेहरे पर पीड़ा के भाव स्पष्टतौर पर पढ़े जा सकते थे।

'ऐसा कहा जाने लगा है कि पश्चिम बंगाल देश का दूसरा कश्मीर बनने की राह पर है। यह बात कितनी सही है?' मैंने उनसे यह सवाल इसलिए पूछा, क्योंकि आज ही सुबह इस प्रकार की एक व्हाट्सअप पोस्ट मेरे पास आई थी। जिसमें कई घटनाओं और तथ्यों के प्रकाश में बताया गया था कि कैसे पश्चिम बंगाल की हालात कश्मीर जैसी होती जा रही है।

'हाँ। यदि ऐसा ही चलता रहा तो पश्चिम बंगाल को कश्मीर बनने से कोई नहीं रोक सकता। वहाँ हिंदुओं को कोई आजादी नहीं है। बंगाल का सबसे बड़ा उत्सव है-दुर्गा पूजा। अब हिंदू वहाँ पूरी स्वतंत्रता से दुर्गा पूजा भी नहीं कर सकता। पिछले साल विसर्जन के लिए दुर्गा पूजा की यात्रा रोक दी गई थी, क्योंकि मुहर्रम का जुलूस उसी सड़क से निकलना था। बंगाल के कई जिले आज मुस्लिम बाहुल्य हो गए हैं। जनसंख्या में यह असंतुलन ही बंगाल की फिजा को खराब कर रहा है।' उन्होंने आगे बताया कि 'तृणमूल कांग्रेस और ममता की सरकार की नीतियों से नाराज होकर अब वहाँ की जनता भारतीय जनता पार्टी को पसंद करने लगी है। पिछले विधानसभा चुनाव में कई जगह भाजपा दूसरे स्थान पर रही है।'

'आपने भाजपा को वोट दिया था क्या? आप भाजपा से जुड़े हैं क्या?' जब उन्होंने भाजपा का जिक्र किया, तब उनसे यह सीधा सवाल मैंने किया।

'नहीं। मैं तो पहले कम्युनिस्ट था। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की सरकार आई है, तब से टीएमसी का कार्यकर्ता हूँ। वैसे अब मैं भी भाजपा को पसंद करने लगा हूँ। मेरे बेटे ने तो अपना पहला वोट भाजपा को ही दिया था।' मुस्कुराते हुए यह कहने के साथ ही उन्होंने अपने बेटे को आवाज लगाई। जब उनका बेटा हमारे नजदीक आया, तब उन्होंने उससे पूछा-'तुमने अपना पहला वोट किसे दिया था?'

'भाजपा को।' उसके बेटे ने कहा।

'कम्युनिस्ट पार्टी और फिर टीएमसी को समर्थन देकर हमने जो गलती की है, अब हमारे बच्चे वह गलती नहीं करने वाले। पश्चिम बंगाल में अधिकतर युवा भाजपा को पसंद कर रहे हैं। इसलिए संभव है कि अगली बार बंगाल में भी कमल खिल जाए। मैं तो चूँकि

शेष पृष्ठ 24 पर....

अमरनाथ यात्रियों पर हुए आतंकवादियों हमले के विरोध में जन्तर-मन्तर पर शहीद भक्तों को श्रद्धांजलि एवं विशाल प्रदर्शन

नई दिल्ली 12 जुलाई 2017। विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल द्वारा अमरनाथ यात्रियों पर हुए आतंकवादियों हमले के विरोध में प्रांत मंत्री बचन जी के नेतृत्व में आज जन्तर-मन्तर पर शहीद भक्तों को श्रद्धांजलि एवं विशाल प्रदर्शन किया गया और राष्ट्रपति महोदय को ज्ञापन दिया गया एवं राष्ट्रपति महोदय व केन्द्र सरकार से अविलम्ब जम्मू कश्मीर सरकार को भंग करने व राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग की गयी। मुख्य वक्ता के रूप में विहिप के संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र जैन जी व बजरंग दल राष्ट्रीय संयोजक मनोज वर्मा जी रहे। संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र जैन जी ने अपने वक्तव्य में सम्बोधित करते हुए कहा कि अमरनाथ यात्रियों पर हमला केवल अमरनाथ यात्रियों पर नही यह हमला हिन्दू समाज के आस्थाओं पर है। भारत के अखण्डता पर है और कश्मीर प्रशासन के उस विश्वास पर है जिस पर भरोसा करके देशभर के अमरनाथ यात्री भारत की कठिनतम यात्रा पर गये। केन्द्र सरकार को, हिन्दू समाज को, हर देशभक्त नागरिक को इनका मुँहतोड़ जवाब देना चाहिए और इनको जवाब देने का सबसे बढ़िया तरीका यही है कि हिन्दू समाज पहले भी कभी इनके धमकियों के आगे नही झुका और अधिक संख्या में जाकर इनकी चुनौती का इनके घर में घुसकर इनको मुँहतोड़ जवाब दिया। इस हमले का पहले से अंदाजा था और इसलिए समाज बार-बार यह मांग कर रहा था कि सम्पूर्ण यात्रा मार्ग सेना के हवाले कर दिया जाये और यात्रा मार्ग की काउंडिग करके आतंकवादियों को समाप्त किया जाये। क्योंकि जम्मू कश्मीर का प्रशासन मामले की गम्भीरता को नही समझ रहा था या कही अपने निहित स्वार्थों के कारण कदम नही उठाना चाहता था और उन्होंने पूर्ण आपराधिक लापरवाही बरती है। अब इसका दुष्परिणाम हमारे अमरनाथ यात्रियों ने भोगा है। अब बचे समय में यात्रा मार्ग सेना के हवाले करनी चाहिए। सम्पूर्ण अयासों की काउंडिग करनी चाहिए। आतंकवादी को समाप्त करना चाहिए और इनके साथी जो चाहे उमर हो या फारूख हो सोज हो या अन्य अलगावादी हो। उन सबको उठाकर देशद्रोह के अपराध में जेल में डाला जाना चाहिए। आज इन सब अलगवावादियों ने और इन सब लोगों ने घडियाली आसू बहाये हैं। देश की जनता इनकी घड़ियाली आंसू पर विश्वास नही करेगी। इनकी सहानुभूति उन आतंकवादियों के साथ है जो हत्यारे थे। जो बलिदान हो गये उनके साथ तो केवल और केवल घड़ियाली आंसू थे। कुछ लोगों ने पिछले दिनों शोर मचाया था, लिग्चिंग का या ''नाट इन माई नेम'' के नाम का भारत में कई जगहों पर इन्होंने शोर मचाने की कोशिश की थी और वास्तव में इनके शोर मचाने से भारत की आत्मा छलनी हो रही थी। क्या उनको समझ में नही आता कि अमरनाथ के यात्रियों की हत्या भी लिग्चिंग है। यह बुरहान की मृत्यु पर मातम मनाने वाले आज चुप क्यों हैं। आंसू बहाने वालो के आंसू क्यों सूख गये हैं। जिनके खून खौल रहे थे वो अचानक ठण्डे क्यों हो गये। केवल इसलिए कि यह हिन्दुओं का खून था। केवल एक मुसलमान की कहीं पर हत्या हो जाती या मृत्यु हो जाती है तो आसमान सर पर उठा लेते हैं। लेकिन 7 अमरनाथ यात्रियों की सरेआम हत्या हो जाती है और इनके मुख से एक शब्द नही निकलते क्या हिन्दुओं का खून इनके लिए पानी बन गया है। वास्तव में यह सभी तत्व ऐसे हैं जो आतंकवादियों की हिम्मत बढ़ाते हैं और हमारा स्पष्ट मानना है कि यही तत्व इन हत्याओं के लिए भी जिम्मेदार हैं।

देश की जनता इनको मांफ नही करेगी। पत्थरबाजों को 10 लाख देने वाले मानवाधिकार को बर्खास्त करके देशभक्त नागरिकों को किसी को यह काम देना चाहिए। अब समय आ गया है कि भारत से आजादी चाहने वालों को भारत से आजाद कर दिया जाये। उनको पाकिस्तान भेज दिया जाये और कश्मीर आतंकवादियों को नही, नफरत फैलाने वालों का नही, खून बहाने वालों का नही, शिवभक्तों का है। इस समय यह संदेश बहुत पुख्ती के साथ देने की जरूरत है। यह हमला शिवभक्तों के लिए चुनौती है। शिवभक्त कभी भी चुनौतियों से घबराये नही

उनका मुकाबला किया। हर हमले के बाद संख्या बढ़ी है। घटी नही, आतंकवादी हमला करके यात्रा को समाप्त करना चाहते हैं। उनको लगता है यदि यात्रा समाप्त हो जायेगी तो हिन्दुओं का घाटी में आना बन्द हो जायेगा। यह उनकी गलतफहमी है। शिव भक्त इनकी गलतफहमी का उत्तर देंगे। घाटी जेहादियों की नही है बाबा भोलेनाथ की है। वहाँ बन्दूक और गोलियों की आवाज नही वहाँ बम भोले के नारे ही गूंजेगे यह उनको हमेशा के लिए समझ लेना चाहिए। कुछ स्थानीय नागरिकों ने आर्तकियों का साथ दिया है। तभी वो इस हत्या को अंजाम दे सके यदि पूरा देश खड़ा हो गया तो उनको सोचना चाहिए, उनका जिन्दा रहना सम्भव होगा। इसलिए हम उनको चेतावनी देते हैं वे इन आतंकवादियों का साथ देना छोड़ दें। वर्ना यही आतंकवादी इनको निशाना बनाकर इनकी बहन बेटियों को उठाकर ले जायेंगे जैसे वे पहले करते रहे हैं उनको थोड़ा भी अपने पापों का प्रायश्चित करना है तो इनका साथ देना बन्द करें और इनको पकड़कर सेना के हवाले करें।

बजरंग दल के राष्ट्रीय संयोजक श्री मनोज वर्मा ने कहा श्रीनगर चुनाव के समय में सेना पर जिहादियों ने पत्थर मारा, उनको गाली दी। जिससे पत्थरबाजों को सबक सिखाने के लिए मेजर द्वारा पत्थरबाज को जीप के आगे बिठाकर कहा अब पत्थर मारो जिससे पत्थरबाज शांत हो गये और चुनाव के समय कोई भी पत्थरबाजी नही हुई। चुनाव शांतिपूर्ण तरीके से हुआ। अब उस पत्थरबाज को जम्मू कश्मीर मानवाधिकार आयोग ने कहा कि उसकी मानहानि हुई है जिससे अब उसको 10 लाख रूपया सरकार मुआवजा दे। जो पत्थरबाज सेना पर आक्रमण करता है उसकी महिमा मण्डित करने का काम मानव अधिकार आयोग ने किया है। ऐसे मानव अधिकार आयोग को तुरन्त बर्खास्त किया जाये और उसके खिलाफ भी राष्ट्रद्रोह का मुकदमा किया जाये ऐसी हम मांग करते हैं।

दिल्ली में बड़ी संख्या में उपस्थित जनसमूह को विहिप के प्रांत मंत्री बचन सिंह, प्रांत उपाध्यक्ष बृज मोहन सेठी, बजरंग दल प्रांत संयोजक शिव कुमार, सह संयोजक श्याम कुमार सहित अनेक वक्ताओं ने सम्बोधित किया।

-महेन्द्र रावत

मीडिया प्रभारी 9953709155

.....पृष्ठ 22 का शेष

सरकारी नौकरी करता हूँ, इसलिए खुलकर भाजपा का समर्थन नहीं कर सकता, वरना ममता दीदी मेरा ट्रांसफर कर देंगी।' उन्होंने बड़ी साफगोई से यह सब बताया और यह भी बताया कि वह दिखते जरूर टीएमसी के साथ हैं, लेकिन अगली बार वोट भाजपा को ही देंगे।

'आप कम्युनिस्ट थे या अभी भी हैं? कम्युनिस्ट होकर आपने यह 'राम नाम' लिखा हुआ पीत वस्त्र क्यों गले में डाल रखा है?' जब उन्होंने स्वयं के कम्युनिस्ट होने की बात कही तब मैंने यह सवाल उनसे किया।

'मैं अब कम्युनिस्ट नहीं हूँ। पहले था। जब बंगाल में कम्युनिस्ट सरकार थी। अध्यात्म में रुचि है। यहाँ पास ही में रामकृष्ण मिशन का आश्रम है। वहाँ कथा चल रही है। उसी के निमित्त हम मालदा से यहाँ आए हैं।' एक छोटी से हँसी से जन्मी खूबसूरत मुस्कुराहट के साथ उन्होंने यह जवाब दिया। इसी जवाब में उन्होंने आगे कहा-'धर्म और अध्यात्म को सिरे से खारिज नहीं किया जा सकता। धर्म-अध्यात्म मार्क्स के कहे अनुसार अफीम तो कदापि नहीं है। भारत में अध्यात्म मनुष्य को सत्य पर चलने के लिए प्रेरित करता है। पश्चिम और कम्युनिज्म जिस चश्मे से धर्म को देखता है, भारत में धर्म को उस चश्मे से देखेंगे तब आप पूरी और स्पष्ट तस्वीर नहीं देख सकते। यहाँ वह चश्मा आपको भ्रम में डाल देगा। अध्यात्म को लेकर भारत का दृष्टिकोण अलग है। भारत में धर्म शोषण का नहीं, बल्कि कर्तव्यों का प्रतीक है। यहाँ अध्यात्म मनुष्यता का संरक्षक है। धर्म-अध्यात्म हमें मानवता के पथ पर आगे बढने को प्रेरित करता है।' धर्म-अध्यात्म के संबंध में वह और भी कुछ कहना चाहते थे, लेकिन उनके परिवार के बाकि साथी अब उन्हें चलने के लिए आवाज देने लगे थे।

'यानी आप कम्युनिज्म छोड़ कर अध्यात्म की यात्रा पर निकल पड़े हैं।' मेरा इतना कहते ही वह हँस दिए। 'आपसे बात करके बहुत अच्छा लगा और पश्चिम बंगाल के हालात को भी समझने का अवसर मिला। बात करने के लिए बहुत धन्यवाद।' इतना कह कर हम भी अपने रास्ते आगे बढ़ गए। ❑

प्रथम पाँच दिनों में 62,608 श्रद्धालुओं ने किए भगवान बोले नाथ के दर्शन

जम्मू 5 जुलाई, बाबा अमरनाथ एवं बूढ़ा अमरनाथ यात्री न्यास द्वारा साधू, सन्त एवं श्रद्धालुओं के लिए आधार शिविर भगवती नगर एवं श्री सनातन धर्म सभा गीता भवन में लंगर लगाए गए हैं। जिसका उद्घाटन जम्मू महानगर के मण्डलायुक्त कुमार राजीव रंजन एवं सह मण्डलायुक्त अरूण मन्हास, बाबा यात्री न्यास के अध्यक्ष सुरेन्द्र मोहन अग्रवाल, सुदर्शन खजूरिया आदि ने विधिवत् ढंग से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। मण्डलायुक्त कुमार राजीव रंजन ने बाबा यात्री न्यास द्वारा श्री अमरनाथ जी की यात्रा एवं बूढ़ा अमरनाथ जी की यात्रा में सक्रिय भूमिका की सराहना की और कहा कि बाबा यात्री न्यास श्री अमरनाथ श्राईन बोर्ड का यात्राओं के अर्तगत सहयोग करता है। बाबा यात्री न्यास के अध्यक्ष सुरेन्द्र मोहन अग्रवाल के अनुसार बाबा यात्री न्यास मूल रूप से बाबा अमरनाथ एवं बूढ़ा अमरनाथ की यात्रा पर आने वाले श्रद्धालुओं को किसी भी असुविधा का सामना न करना पड़े, इसके लिए प्रशासन से जुड़ा रहता है। उन्होंने कहा कि जून, जुलाई, अगस्त के महीनों में जम्मू-कश्मीर प्रान्त में मचेल माता यात्रा (गुलाबगढ़), हुद माता यात्रा, सुकराला माता यात्रा (बिलावर), शिव खोड़ी (रियासी) व अन्य अनेक स्थानीय यात्राएँ होती हैं जिसमें स्थानीय एवं देशभर से आये लोग भाग लेते हैं। उनको किसी प्रकार कि असुविधा न हो इसके लिए बाबा यात्री न्यास द्वारा सहायता केन्द्र चलाए जाते हैं। इस अवसर पर विहिप प्रान्त कार्यकारी अध्यक्ष सुरेश चन्द्र, विहिप प्रान्त उपाध्यक्ष शक्ति दत्त शर्मा, दीपक शर्मा, सुरेश शर्मा आदि उपस्थित थे। वर्ष 2011 में चरम पर थी श्री अमरनाथ जी यात्रा।

पिछले कुछ वर्षों में श्री अमरनाथ जी यात्रा पर आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या:-

साल	श्रद्धालु (लाखों में)
2007	2.96
2008	5.33
2009	3.81
2010	4.56
2011	6.35
2012	6.20
2013	3.54
2014	3.74
2015	3.52
2016	2.20

बाबा अमरनाथ जी यात्रा के पाँच जत्थे अब तक निर्विघ्न पवित्र गुफा की ओर प्रस्थान कर चुके हैं। अब तक कुल 62,608 श्रद्धालुओं ने बाबा बोले नाथ जी के दर्शन किए।

-राजेश भसीन

मैं सभी प्राणियों को सामान रूप से देखता हूँ ना कोई मुझे कम प्रिय है ना अधिक लेकिन जो मेरी प्रेमपूर्वक आराधना करते हैं वो मेरे भीतर रहते हैं और मैं उनके जीवन में आता हूँ।

-भगवान श्रीकृष्ण

अँधेरा चाहे कितना भी घना हो लेकिन एक छोटा सा दीपक अँधेरे को चीरकर प्रकाश फैला देता है वैसे ही जीवन में चाहे कितना भी अँधेरा हो जाये विवेक रूपी प्रकाश अन्धकार को मिटा देता है।

विश्व हिन्दू परिषद द्वारा जम्मू बंद का आह्वान

जम्मू 12 जुलाई, कश्मीर संभाग के अनंतनाग जिले में गत 10 जुलाई को बाबा बर्फानी के दर्शन कर लौट रही श्री अमरनाथ यात्रियों की बस पर घात लगाकर आतंकवादियों ने हमला किया। आतंकवादियों द्वारा किए गए इस हमले में 8 श्रद्धालुओं की मृत्यु हो गई और दर्जन भर श्रद्धालु घायल हो गये। इसके विरोध में विहिप एवं बजरंगदल द्वारा जम्मू बंद का आह्वान किया गया और जगह-जगह पर टायर जलाकर रोष प्रदर्शन किया गया। बजरंगदल के कार्यकर्ताओं ने बाईक रैली निकालकर दुकानें एवं अन्य कारोबारी संस्थानों को बंद करवाया। राज्य सरकार एवं सुरक्षा ऐजेंसियों के विरोध में पुतला दहन कर अपना रोष प्रदर्शन किया। बजरंगी दिनभर बम-बम भोले के जयघोष लगाते हुए बाजारों में घूमते रहे। विश्व हिन्दू परिषद की प्रान्त ईकाई द्वारा विहिप मुख्यालय शक्ति आश्रम में पत्रकारवार्ता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विहिप प्रान्त अध्यक्ष लीलाकरण शर्मा ने राज्य सरकार, प्रशासन एवं सुरक्षा ऐजेंसियों पर प्रश्न चिह्न लगाते हुए कहा कि बिना पंजीकरण के यात्रियों को आधार शिविर भगवती नगर में प्रवेश ही नहीं करने दिया जाता जबकि यात्री भगवान भोलेनाथ के दर्शन कर वापिस आ रहे थे। उन्होंने कहा कि यात्रियों एवं बस चालक द्वारा स्पष्ट किया गया है कि हम आधार शिविर भगवती नगर से कश्मीर की ओर रवाना हुए और जहाँ-जहाँ सी.आर.पी. एफ और श्राईन बोर्ड द्वारा बनाए कैम्पों से होते हुए वापिस जम्मू की ओर आ रहे थे तब हमारी बस पर हमला किया गया। यात्रियों के अनुसार बस पर आधार शिविर भगवती नगर, सी.आर.पी.एफ. एवं बेस कैम्प बालटाल के प्रवेश किए हुए स्टिकर लगे हैं। लीलाकरण शर्मा ने कहा कि 10 जून 2017 को विश्व हिन्दू परिषद के संयुक्त महामंत्री एवं प्रवक्ता डॉ. सुरेन्द्र जैन के नेतृत्व में विहिप और बाबा अमरनाथ एवं बूढ़ा अमरनाथ यात्री न्यास के अधिकारियों का एक प्रतिनिधिमण्डल मा0 राज्यपाल एन.एन. वोहरा एवं मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती से मिलकर अमरनाथ एवं बूढ़ा अमरनाथ यात्राओं की सुरक्षा को सुदृढ़ करने का ज्ञापन सौंपा था। उन्होंने कहा कि मेज़र गोगोई द्वारा जीप पर बांधकर घुमाने वाले पत्थरबाज को मानवाधिकार द्वारा 10 लाख रूपये दिए जाने की हम कड़ी निंदा करते हैं। मेज़र गोगोई द्वारा पत्थरबाज को जीप पर बांधकर नहीं घुमाया जाता तो स्थानीय लोग, पुलिस प्रशासन एवं सी.आर.पी.एफ. के जवानों को भारी क्षति पहुँचती। कश्मीर में पकड़े गये आतंकवादी आदिल के बारे में मिडिया एवं सोशल मिडिया पर फैलाए जा रहे गलत समाचारों का खण्डन करते हुए उन्होंने कहा कि आदिल उत्तर प्रदेश के जिला मुजफ्फरनगर का रहने वाला संजीव कुमार शर्मा धर्मपरिवर्तन कर मुस्लिम बन चुका है और आतंकी संगठनों से जुड़ने के कारण आतंकी बना। प्रशासन द्वारा यह कहने पर की वह गैर मुस्लिम आतंकवादी है। उन्होंने कहा कि कश्मीर में तो 90 प्रतिशत कश्मीरी द्राबू, भट्ट, वांगडू आदि कश्मीरियों ने धर्मपरिवर्तन किया हुआ है।

इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद की उपाध्यक्षा श्रीमती सुशीला अबरोल, देवराज भी उपस्थित थे।

-राजेश भसीन

.....पृष्ठ 18 का शेष

चाहिये। परन्तु यह लोकतंत्र प्रणाली की आवश्यकता भी है और विवशता भी कि जब तक कोई समाज संगठित होकर किसी भी नेता आदि को अपने सुख-दुख से अवगत नही करवायेगा तब तक उनकी किसी भी सांस्कृतिक, धार्मिक व सामाजिक परंपराओं को प्रशासनिक व राजनैतिक स्तर पर कोई प्राथमिकता नही दी जा सकेगी। अत: वर्तमान परिस्थितियों में बिगड़ते हुए जनसंख्या अनुपात को सुधारना व जातिगत आधार पर बिखरे हुए वोटों को एकजुट करना अपनी सांस्कृतिक धरोहरों को जीवंत रखने व लोकतंत्र की सुरक्षा के लिए सर्वाधिक आवश्यक है।

-विनोद कुमार सर्वोदय

(राष्ट्रवादी चिंतक व लेखक) गाजियाबाद